



सत्यमेव जयते

वीरगंगा

राजभाषा पत्रिका
संयुक्तांक (72वाँ एवं 73वाँ)



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, मध्य प्रदेश
लेखा भवन, झांसी रोड़, ग्वालियर – 474002
ई-मेल : agaemadhyapradesh2@cag.gov.in

रायपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह-2023 में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, मध्य प्रदेश ग्वालियर को वर्ष 2020-21 के लिए राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार, शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र, माननीय गृह राज्य मंत्री श्री अजय कुमार मिश्रा से ग्रहण करते हुए वरिष्ठ लेखा अधिकारी श्री जी.डी. लालवानी एवं कनिष्ठ अनुवादक सुश्री पुष्पा साहू।



वीरंगना पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
सुश्री गीताली तारे
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक
श्री श्याम सुंदर शर्मा
उप महालेखाकार/प्रशासन

परामर्शदात्री समिति

सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता, वरिष्ठ उप महालेखाकार/निधि
श्री बाल किशन नोदिया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी
श्री अशोक कुमार चिरगैया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
श्री रवींद्र सिंह बिष्ट
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
प्रशासन

संपादिका
सुश्री प्रीति सिंह
वरिष्ठ अनुवादक

संपादक सहयोग

श्री लवनीश कुमार
सहायक लेखा अधिकारी/प्रशासन

श्री रूपेंद्र कुमार कौशल
कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री पुष्पा साहू
कनिष्ठ अनुवादक

श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा
लेखापाल

पत्रिका अभिकल्पन

श्री रूपेंद्र कुमार कौशल, कनिष्ठ अनुवादक

-: अस्वीकरण :-

रचनाकारों के विचार उनके व्यक्तिगत विचार हैं। उनसे मुख्य संरक्षक, संरक्षक, परामर्शदात्री समिति तथा संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव के दौरान वृक्षारोपण कार्यक्रम



प्रधान महालेखाकार महोदया द्वारा वृक्षारोपण



प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा वृक्षारोपण

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	संदेश	संदेश देने वाले अधिकारी	पृष्ठ सं.
1	गृह मंत्री का संदेश		01
2	प्रधान महालेखाकार का संदेश	सुश्री गीताली तारे	04
3	वरिष्ठ उप महालेखाकार/निधि का संदेश	सुश्री सरिता कुमारी गुप्ता	05
4	उप महालेखाकार/प्रशासन का संदेश	श्री श्याम सुंदर शर्मा	06
5	संपादकीय	श्री रवींद्र सिंह बिष्ट, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	07
6	आपके पत्र		08
गद्य संकलन			
	रचना	रचनाकार	
7	मुख पृष्ठ परिचय	सुश्री प्रीति सिंह, वरिष्ठ अनुवादक	10
8	अधिक मान बढ़ाई—श्रेष्ठ मानवता के लिए हानिकारक	श्री लालमणि शर्मा, सेवानिवृत्त टी.आई	11
9	उधार लेने और न चुकाने की कला	श्री मदन गोपाल शर्मा, सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापाल	13
10	अतीत	श्री देवेंद्र कुमार मिश्र, लेखापाल	15
11	एकल परिवार का दंश	सुश्री प्रीति सिंह, वरिष्ठ अनुवादक	18
12	दहेज प्रथा— भारतीय समाज का अभिशाप	श्री गिरधारीलाल गोयल, सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापाल	21
13	कुछ बातें महिलाओं के मन की	सुश्री पुष्पा साहू, कनिष्ठ अनुवादक	23
14	जीवन में हॉबी का महत्व	श्री सूर्यकांत भारद्वाज, सहायक लेखा अधिकारी	25
15	स्त्री शक्ति	श्रीमती पुष्पा, पत्नी — श्री रूपेंद्र कौशल, कनिष्ठ अनुवादक	29
16	इंतजार	श्री प्रवीण कुमार कम्ठान, सेवानिवृत्त सहायक लेखा अधिकारी	31
17	पत्रकारिता —प्रभाव एवं प्रसार	श्री हरिवंश सिंह कुशवाह, डी.ई.ओ.	33
पद्य संकलन			
18	मैं भारत हूँ	श्री गौरव कुमार पांडेय, सहायक लेखा अधिकारी	35
19	बेटियाँ	श्रीमती रंजना ठाकुर, पत्नी—श्री उदित कुमार ठाकुर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	37
20	सफर	सुश्री ब्यूटी अंकिता, अतिथि रचनाकार	38
21	इंसान कितना भोला है	श्री रूपेंद्र कौशल, कनिष्ठ अनुवादक	39
22	रोटी	श्री भूपेंद्र भोजराज भार्गव, अतिथि रचनाकार	40
23	किस बात पे हंसना है, किस बात पे रोना है	श्री हरिओम कुमार, अतिथि रचनाकार	41
24	मेरी रसोई	श्रीमती पुष्पा, पत्नी — श्री रूपेंद्र कौशल, कनिष्ठ अनुवादक	42
25	आपदा	श्रीमती रंजना ठाकुर, पत्नी—श्री उदित कुमार ठाकुर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	43
26	सुनहरी शाम	श्रीमती रंजना ठाकुर, पत्नी—श्री उदित कुमार ठाकुर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	43
27	क्या लिखूँ	श्री रूपेंद्र कौशल, कनिष्ठ अनुवादक	44
28	मानव और गुलाब	श्री हरिवंश सिंह कुशवाह, डी.ई.ओ.	45
29	मर्यादा की खूँटी	श्री मदन गोपाल शर्मा, सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापाल	46
30	नारी की व्यथा	श्री विवेक सिंघल, लेखापाल	47
31	छोटा सा ख्वाब	श्रीमती रंजना ठाकुर, पत्नी—श्री उदित कुमार ठाकुर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	48
32	जीना हुआ मुहाल	श्री ए.एच. खान, वरिष्ठ लेखापाल	49
कार्यालयीन गतिविधियाँ			
33	खेलकूद प्रतिस्पर्धा	कल्याण अनुभाग के सौजन्य से	50
34	महिला दिवस — 2022	मनोरंजन क्लब के सौजन्य से	52
35	हिंदी पखवाड़ा — 2022		54



हिंदी दिवस 2022

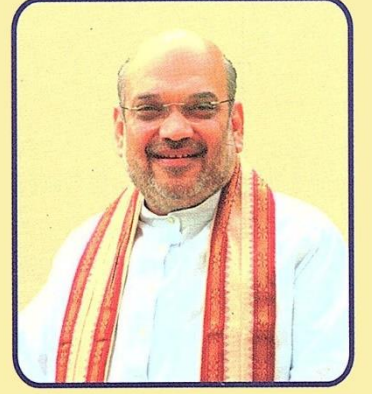
के अवसर पर
माननीय गृह मंत्री जी
का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं ।

हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। देश की भाषाई संपन्नता को ध्यान में रखते हुए संविधान निर्माताओं ने भारत के संविधान में भाषाओं के लिए अलग से आठवीं अनुसूची का प्रावधान किया जिसमें प्रारंभ में 14 भाषाएं रखी गयी थीं और अब इस अनुसूची में कुल 22 भाषाएं सम्मिलित हैं। भारत की सभी भाषाएं महत्वपूर्ण हैं और अपना समृद्ध इतिहास भी रखती हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ समन्वय स्थापित करते हुए हिंदी ने जनमानस के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। यही कारण है कि आज़ादी के आंदोलन में अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने हिंदी को संपर्क भाषा बनाकर आंदोलन को गति प्रदान की। 'स्वराज' प्राप्ति के हमारे स्वतंत्रता आंदोलन में स्वभाषा का आन्दोलन निहित था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिंदी की महती भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा हिंदी और देवनागरी लिपि को अपनाया। संविधान के अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए निदेश दिए गए हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रेरणादायक नेतृत्व में आज जब पूरा देश आज़ादी का अमृत महोत्सव मना रहा है और प्रत्येक क्षेत्र में हम नई ऊर्जा के साथ नये संकल्प ले रहे हैं, ऐसे में यह सामूहिक प्रयास होना चाहिए कि राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जाए।

किसी लोकतांत्रिक देश में सरकारी कामकाज की भाषा तभी सार्थक भूमिका अदा कर सकती है जब वह देश के जन सामान्य से जुड़ी हो और प्रयोग करने में आसान हो, ज्यादा से ज्यादा लोग उसे समझते हों और जनसामान्य में लोकप्रिय हो। हिंदी की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 14 सितंबर 1949 के दिन हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। इसके साथ ही राजभाषा हिंदी में आवश्यकता के अनुसार शब्दावली निर्माण, वर्तनी के मानकीकरण किए गए और सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति अपनाई गई। राजभाषा की इस विकास यात्रा में हमने कई लक्ष्य प्राप्त किए हैं लेकिन अभी भी बहुत कुछ किया जाना शेष है। विगत तीन वर्षों से प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करने के लिए गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयासरत है जिससे विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में हिंदी का काम-काज तेजी से बढ़ा है। मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि वर्तमान में गृह मंत्रालय में ज्यादातर कार्य हिंदी में किया जाता है तथा कई अन्य मंत्रालयों में माननीय मंत्री भी अपना अधिकांश कार्य राजभाषा हिंदी में करते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन की गति तीव्र करने और समय समय पर किए गए कार्यों की समीक्षा हेतु मई, 2019 में नई सरकार के गठन के पश्चात 57 मंत्रालयों में से 53 में हिंदी सलाहकार समितियों का गठन किया गया है तथा निरंतर बैठकें आयोजित की जा रही हैं। देश भर में विभिन्न शहरों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से अब तक कुल 527 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया जा चुका है। विदेशों में लंदन, सिंगापुर, फिजी, दुबई और पोर्ट लुई में भी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया गया है। राजभाषा कार्यान्वयन को और मजबूत करने की दिशा में संसदीय राजभाषा समिति अपनी सिफारिशों के दस खंड माननीय राष्ट्रपति जी को

प्रस्तुत कर चुकी है तथा 11 वां खंड शीघ्र ही सौंपा जा रहा है।

राजभाषा विभाग द्वारा 13-14 नवंबर, 2021 को बनारस में पहला अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन तथा नई दिल्ली में केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के अधिकारियों के लिए पहला तकनीकी सम्मेलन आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों से हिंदी प्रेमियों के उत्साह में अपार वृद्धि हुई है। यह और भी सुखद है कि हिंदी दिवस-2022 तथा द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का ऐतिहासिक आयोजन गुजरात के सूरत शहर में हो रहा है।

गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में निरंतर प्रयत्नशील है। राजभाषा विभाग ने स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ' का निर्माण और विकास किया है जिसमें आज लगभग 22 लाख वाक्य शामिल किए जा चुके हैं। इस टूल का प्रयोग सुनिश्चित कर सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की गति एवं गुणवत्ता बढ़ाई गई है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए 'लीला हिंदी प्रवाह' मोबाइल ऐप तैयार किया गया है जिसे अपनाकर 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी-अपनी मातृभाषाओं से निःशुल्क हिंदी सीख सकते हैं। राजभाषा विभाग के 'ई-महाशब्दकोश' में 90 हजार शब्द सम्मिलित किए गए हैं और 'ई-सरल' हिंदी वाक्यकोश में 9 हजार वाक्य शामिल हैं।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश को नई शिक्षा नीति मिली जिसमें मातृभाषा में शिक्षा देने को प्राथमिकता दी जा रही है। राजभाषा विभाग ने अमृत महोत्सव के अवसर पर विधि, तकनीकी, स्वास्थ्य, पत्रकारिता तथा व्यवसाय आदि सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रचलित शब्दों को शामिल करते हुए हिंदी से हिंदी 'बृहत शब्दकोश' के निर्माण पर भी काम शुरू किया है और सुलभ संदर्भ के लिए एक अच्छे शब्दकोश का सृजन किया जा रहा है। इस तरह की उन्नत शब्दावली प्रशिक्षण, अनुवाद तथा शीघ्रता से ग्रहण करने में भाषा की जानकारी की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

हजारों वर्षों से भारतीय सभ्यता की अविरल धारा हमारी भाषाओं, संस्कृति और लोकजीवन में सुरक्षित रही है। भारत में स्थानीय भाषाओं का योगदान हमारी संस्कृति को आगे बढ़ाने के लिए अतुलनीय रहा है। इन भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी उन समस्त भारतीय भाषाओं की मूल परंपरा से है जो इस देश की मिट्टी से उपजी हैं, यहीं पुष्पित पल्लवित हुई हैं और जिन्होंने अपनी शब्द-संपदा, भाव संपदा, रूप, शैली और अपने पदों से हिंदी को लगातार समृद्ध किया है। **राजभाषा हिंदी किसी भी भारतीय भाषा की प्रतिस्पर्धी नहीं बल्कि उसकी सखी है और हमारी सभी भाषाओं का विकास एक दूसरे के परस्पर सहयोग से ही संभव है।**

प्रिय देशवासियों ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर मैं आप सभी का आह्वान करता हूँ कि आप और हम मिलकर यह संकल्प लें कि अपनी भाषाओं पर गर्व की अनुभूति करेंगे। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी देश-विदेश के मंचों पर हिंदी में उद्बोधन देते हैं जिससे सभी हिंदी प्रेमियों में उत्साह का संचार होता है। आज़ादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और माननीय प्रधानमंत्री जी के प्रतिभाशाली नेतृत्व में आने वाले 25 वर्षों को देश में अमृतकाल के रूप में मनाया जा रहा है। ऐसे में भाषाई समरसता को ध्यान में रखते हुए हिंदी तथा हमारी सभी भारतीय भाषाओं का विकास अत्यंत आवश्यक है।

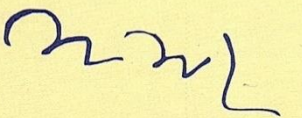
आइये, आज संकल्प लें कि अपने दैनिक कार्यों में, कार्यालय के कामकाज में अधिक से अधिक काम हिंदी तथा स्थानीय भाषाओं में करके दूसरों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तथा संवैधानिक दायित्वों की पूर्ति करेंगे।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को पुनः मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!

नई दिल्ली

14 सितंबर, 2022


(अमित शाह)

प्रधान महालेखाकार का संदेश



कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'वीरांगना' के नूतन अंक के प्रकाशन पर मैं अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूँ। राजभाषा पत्रिका वीरांगना का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार की दिशा में न केवल प्रशंसनीय प्रयास है अपितु, यह कार्यालय के उदीयमान रचनाकारों की अभिव्यक्ति हेतु सुगम मंच भी प्रदान करती है।

हिंदी सरल और सुबोध भाषा है। यह हमारी राजभाषा के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर संपर्क भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित है। यह कार्यालय 'क' क्षेत्र में स्थित है। अतः प्रत्येक अधिकारी और कर्मचारी का यह प्रयास होना चाहिए कि हिंदी में ही सम्पूर्ण कार्य निष्पादित कर उसके विकास में सार्थक योगदान दें। प्रसन्नता का विषय है कि हमारे कार्यालय में शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में ही निष्पादित किए जाते हैं। कार्यालय की बड़ी उपलब्धि है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा रायपुर, छत्तीसगढ़ में आयोजित मध्य एवं पश्चिम क्षेत्रों के संयुक्त सम्मेलन वर्ष-2023 में हमारे कार्यालय को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2020-21 के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

पत्रिका में प्रकाशित समस्त रचनाओं के रचनाकारों को बधाई देती हूँ। पत्रिका के संपादन से जुड़े अधिकारी/कर्मचारी भी प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने पत्रिका को सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया है।

आशा करती हूँ 'वीरांगना' का यह अंक समस्त पाठकों की प्रशंसा दृष्टि पाने में सफल रहेगा। कामना करती हूँ कि पत्रिका का अनवरत प्रकाशन होता रहे एवं कार्यालय में राजभाषा की अविरल धारा इसी प्रकार प्रवाहित होती रहे।

गीताली तारे

गीताली तारे
प्रधान महालेखाकार

वरिष्ठ उप महालेखाकार/निधि का संदेश



राजभाषा पत्रिका “वीरांगना” का नवीनतम अंक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत आनंद की अनुभूति हो रही है। हिंदी न केवल देश की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है अपितु हमारी संस्कृति एवं सभ्यता की संवाहिका भी है। राजभाषा हिंदी के सर्वांगीण विकास के लिए हर संभव प्रयास करना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य ही नहीं अपितु, व्यक्तिगत कर्तव्य भी है। गर्व की बात है कि राजभाषा के विकास में हमारे कार्यालय का योगदान छोटा किंतु महत्वपूर्ण है। इसका सुष्ठु उदाहरण राजभाषा पत्रिका “वीरांगना” का अविरोध प्रकाशन है जो राजभाषा के प्रति प्रेम उजागर करने की सुन्दर व्यवस्था है।

“वीरांगना” के इस अंक में प्रकाशित रचनाओं एवं पत्रिका के स्तर में निरंतर उत्कृष्टता बनाए रखने के लिए रचनाकार एवं संपादक मंडल निश्चित ही बधाई के पात्र हैं। मेरी कामना है कि पत्रिका की यात्रा ऐसे ही जारी रहे एवं राजभाषा के प्रति प्रेम और समर्पण का भाव निरंतर बढ़ता जाए।

सुनिता कुमारी गुप्ता
वरिष्ठ उप महालेखाकार /निधि

उप महालेखाकार/प्रशासन का संदेश



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर की गृह पत्रिका 'वीरांगना' के संयुक्तांक (72वें एवं 73वें) सुधी पाठकगण के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। मैं यह आशा करता हूँ कि 'वीरांगना' का यह अंक पाठकों को अभिभूत करने में सहायक सिद्ध होगा। राजभाषा हिंदी भारतवर्ष की अनेकता में एकता का आधार है। यह देश की सांस्कृतिक अस्मिता की परिचायक है। देश को सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्धशाली बनाने के लिए राजभाषा का विकास एवं संवर्धन बेहद जरूरी है। हमारे कार्यालय को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2020-21 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। साथ ही कार्यालयीन पत्रिका 'वीरांगना' के श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया जो कि हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यालय की प्रशंसनीय एवं सघन प्रयास का द्योतक है।

हमारा देश इस वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव में आइए संकल्प लें कि राजभाषा के उत्तरोत्तर विकास के लिए पूरी निष्ठा और परिश्रम से प्रयास करेंगे।

पत्रिका के सफल प्रकाशन में अमूल्य योगदान हेतु संपादक मंडल को धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

श्याम सुंदर शर्मा

उप महालेखाकार/प्रशासन

संपादक की कलम से

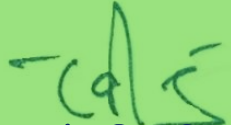


राजभाषा हिंदी के विकास एवं प्रचार-प्रसार के प्रति समर्पित कार्यालय की राजभाषा पत्रिका 'वीरांगना' का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष सादर निवेदित है।

प्रत्येक मनुष्य में विचारों का निरंतर मंथन चलता रहता है जिनके संप्रेषण के लिए एक माध्यम की आवश्यकता होती है। कार्यालय की पत्रिका वह सुंदर माध्यम है जो कार्यालय के कर्मियों की आंतरिक सृजनशीलता के प्रस्फुटन हेतु मंच प्रदान कर उनकी अभिव्यक्ति को मुखर और स्पंदनशील बनाती है।

'वीरांगना' का प्रस्तुत अंक साहित्य की विविध विधाओं यथा-लेख, कविताएँ, व्यंग्य और शायरी से अलंकृत एक सुंदर संग्रह है जो पाठकों के हृदय को स्फुरित करेगा। पत्रिका में विविध विषयों को सहेजा गया है जो रोचक और मनोरम के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी हैं। श्री लालमणि शर्मा के लेख "अधिक मान बड़ाई श्रेष्ठ मानवता के लिए हानिकारक" में झूठी प्रशंसा प्राप्त करने की प्रथा के दुष्परिणामों पर प्रकाश डाला गया है। इसी प्रकार, श्री सूर्यकांत भारद्वाज ने अपने लेख "जीवन में हॉबी का महत्व" में हॉबी के महत्व को बताने का प्रयास किया है। जहाँ एक ओर मदन गोपाल शर्मा ने व्यंग्यात्मक शैली में लिखे अपने लेख "उधार लेने और न चुकाने की कला" में उधार लेने वालों को एक कलाकार बताया है वहीं गिरधारीलाल गोयल ने अपने सामाजिक लेख "दहेज प्रथा भारतीय समाज का अभिशाप" में समाज में व्याप्त दहेज प्रथा पर चिंता व्यक्त की है। इसी प्रकार, श्री हरिवंश सिंह कुशवाह की कविता "मानव और गुलाब" एवं ब्यूटी अंकिता की कविता "सफ़र" में जीवन दर्शन की झलक दिखती है। इसी प्रकार, अन्य रचाएँ भी अप्रतिम हैं एवं ध्यानाकर्षित करेंगी।

पत्रिका के नूतन अंक के प्रकाशन पर मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं रचनाकारों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने विभागीय दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हुए राजभाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया है। आशा ही नहीं वरन् पूर्ण विश्वास है कि वीरांगना के विगत अंकों की तरह ही इस अंक को भी आप सभी का स्नेह प्राप्त होगा। पाठकों के अमूल्य सुझाव पत्रिका को उत्कृष्ट बनाने में पाथेय सिद्ध होंगे।


रवींद्र सिंह बिष्ट
प्रधान संपादक

आपके पत्र

कृपया आपके कार्यालय के पत्र सं. प्रशासन/ हिन्दी / वीरांगना - 71वें अंक / D252 दिनांक : 12.08.2021 का संदर्भ लें जिसके द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में हिन्दी पत्रिका “ वीरांगना” के 71वें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्रीमती रचना सक्सेना का लेख “सबसे बड़ी गुरु-माँ, सुश्री सुष्मिता श्रीवास्तव, आशुलिपिक का लेख “सैनिक” एवं श्री हरिओम कुमार, अनुवादक की कविता “माँ” अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय है। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(मुकेश कुमार यादव)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)

इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका “ वीरांगना” के 71वें अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ (विकास)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी प्रकोष्ठ

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड का कार्यालय, राँची

इस कार्यालय में आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका 'वीरांगना' का 71वां अंक प्राप्त हुआ है तद हेतु धन्यवाद।

सर्वप्रथम, पत्रिका प्रेषण के लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रोचक, सुपाठ्य, उच्च कोटि की ज्ञानवर्धक सामग्री से परिपूर्ण है। सभी रचनाओं में सकारात्मकता, रचनात्मकता, तथा नवीनता को उत्कृष्ट तरीके से प्रस्तुत किया गया है। पत्रिका की साज-सज्जा, छायाचित्र प्रशंसा के पात्र हैं। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ समयानुकूल, ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी, तथा शिक्षाप्रद हैं जो बरबस ही पाठक-वृंद को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाश हेतु संपादक मण्डल एवं सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

राजभाषा अनुभाग कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.)-II, महाराष्ट्र

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका “वीरांगना” के 71वें ई-संस्करण अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत मनमोहक है तथा सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। श्री मदन गोपाल शर्मा, अतिथि रचनाकार का लेख “आचार्यप्रज्ञ” तथा श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा, आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक की कविता “मैं कब कहता हूँ” रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। आपके कार्यालय की पत्रिका “वीरांगना” का यह अंक, राजभाषा हिन्दी की प्रगति की दिशा में अद्वितीय है। “वीरांगना” की उत्तरोत्तर उन्नति हेतु शुभकामनाएँ।

संजीव

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय प्राप्ति)

इंद्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली-110002 ए.जी.सी.आर. भवन

आपके द्वारा प्रेषित पत्र क्र.: प्रशासन/हिन्दी/वीरांगना - 71वां अंक/डी-252 दिनांक 12.08.2021 के द्वारा हिन्दी ई-पत्रिका 'वीरांगना' के 71वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की हैं। 'ढलता सूरज', 'सैनिक', मेरा शहर अयोध्या', सबसे बड़ी गुरु-माँ', 'खानपान का स्वास्थ्य एवं विचारों पर गहरा प्रभाव एवं' न जाने ऐसी क्या बात हो गई' आदि रचनाएँ विशेष रूप से रुचिकर एवं प्रशंसनीय हैं। रचनाओं के चयन में संपादक मंडल की कुशलता एवं साहित्यिक समझ उल्लेखनीय व प्रेरणादायक है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(हिंदी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा

आपके पत्र

उपरोक्त विषय से संबंधित आपके कार्यालय के पत्रांक प्रशासन /हिन्दी/ वीरांगना-71वाँ अंक/D-252, दिनांक- 12/08/2021 के अनुसरण में हिंदी गृह पत्रिका “वीरांगना” के 71वें अंक के ई-संस्करण की संलग्नित प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई है। सादर धन्यवाद।

हिन्दी पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा हमेशा की तरह अत्यन्त आकर्षक एवं मनोरम है। हिन्दी पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कहानियां एवं कविताएं पठनीय, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री जे.जे. श्रीवास्तव ‘ज्योति’ द्वारा लिखित हास्य व्यंग्य “करोड़ों के ईनाम”, श्री मदन गोपाल शर्मा द्वारा लिखित व्यंग्य- “आचार्यप्रज्ञ”, सुश्री काजल वर्मा द्वारा लिखित लेख “मेरा शहर अयोध्या”, श्रीमती रचना सक्सेना द्वारा लिखित लेख- “सबसे बड़ी गुरु माँ”, तथा श्री हरिओम कुमार द्वारा लिखित कविताएं “माँ अपना हमें बना लेना” एवं अन्य सभी रचनाएं भी विशेष रूप से सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं और शुभेच्छाएं हैं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशा.
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (इस्पात) राँची

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ई-मेल दिनांक 12/08/2021 एवं पत्र क्रमांक:- प्रशासन / हिन्दी / वीरांगना - 71वाँ अंक डी-252 दिनांक 12/08/2021 के द्वारा आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका ‘वीरांगना’ के 71वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। सुश्री सुष्मिता श्रीवास्तव का लेख ‘सैनिक’, श्रीमती रचना सक्सेना का लेख ‘सबसे बड़ी गुरु-माँ’ एवं श्री ए. एच. खान की गजल ‘सरे राह यूँ रुसवा न कीजिये’ काफी रोचक, सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई का पात्र है। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामनाएँ हैं।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी(हिन्दी कक्ष)
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) का कार्यालय, बिहार, पटना

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका “वीरांगना” के 71वें अंक की अंक मेल के माध्यम से ई-पत्रिका प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सभी लेख, कविताएं, आदि रचनाएं रोचक, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकारों ने विषय के अनुसार रचनाओं का बहुत ही सुंदर तरीके से वर्णन किया है, इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। इसके साथ ही कार्यालयीन गृह पत्रिका “वीरांगना” का न.रा.का.स. द्वारा वर्ष 2019 के लिए सर्वश्रेष्ठ पत्रिका के लिए प्रथम पुरस्कार स्वरूप “पत्रिका शील्ड” और हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए “नराकास शील्ड” प्राप्त करने पर बहुत-बहुत बधाई। “पत्रिका के मुख पृष्ठ नेताजी सुभाष चंद्र जी की 125 वीं जयंती पर उनको समर्पित पत्रिका के आवरण पर उनका चित्र राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों की स्मृति पुनः सजीव करता है। पत्रिका नए कलेवर में और भी आकर्षक बन गई है। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार का कार्य बहुत ही सराहनीय है और सभी रचनाकारों की हिंदी लेखन प्रतिभा भी बहुत ही प्रशंसनीय है।” पत्रिका में कार्यालयी चित्रों ने पत्रिका को और भी निखारा है। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ अगले अंक (हार्ड कॉपी) की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका के सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

(विनोद रियू)
व. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) जम्मू व कश्मीर, जम्मू

पत्र क्रमांक: प्रशासन / हिन्दी / वीरांगना 71 वां अंक डी-252, दिनांक 12.08.2021 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा ई-पत्रिका “वीरांगना” के 71वें अंक की ई-प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं सुपाठ्य, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेष रूप काजल वर्मा जी द्वारा लिखा गया लेख “ मेरा: शहर अयोध्या” बहुत ही सुंदर है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं। एक अनुरोध है कि हमारे कार्यालय द्वारा भेजे गये पावती को पत्रिका के अगले अंक के “आपके पत्र” में जरूर शामिल करें।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पश्चिम बंगाल



मुख पृष्ठ परिचय

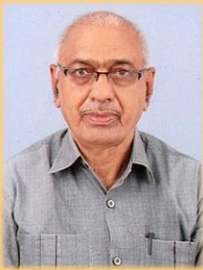
सुश्री प्रीति सिंह

वरिष्ठ अनुवादक

पत्रिका के मुख पृष्ठ पर अंकित छायाचित्र 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' को समर्पित है। 15 अगस्त, 2022 को हमारे देश में आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ मनायी गई। आज़ादी का अमृत महोत्सव का उद्देश्य गत 75 वर्षों में भारत की विकास यात्रा की विवेचना कर, भविष्य के लिए उन्नत और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण करना है।

आज़ादी का 75वाँ वर्ष किसी भी देश के लिए अति महत्वपूर्ण समय होता है। इसलिए सरकार ने आज़ादी के 75वें वर्ष को अमृत महोत्सव के रूप में मनाने का निर्णय लिया। आज़ादी के अमृत महोत्सव की आधिकारिक शुरुआत प्रधानमंत्री ने 12 मार्च 2021 को अहमदाबाद के साबरमती आश्रम से की और यह महोत्सव 15 अगस्त, 2023 तक मनाया जाएगा। महोत्सव के माध्यम से ऐसे वीर-वीरांगनाओं की गौरव गाथाओं को आमजनों के बीच लाना है जिनकी आज़ादी के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही थी परंतु जिन्हें इतिहास के पन्नों में उचित स्थान नहीं मिला पाया। अमृत महोत्सव, उन्हें आभार व्यक्त करने का एक सुअवसर है। अतः इस महोत्सव का व्यापक प्रचार-प्रसार और जन साधारण की भागीदारी बढ़ाने के लिए भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों द्वारा कई पहल किए जा रहे हैं।

आज़ादी के अमृत महोत्सव से संबंधित एक पहल हमारे कार्यालय में भी की गई। इस महोत्सव के उद्देश्य एवं महत्व को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच लाने के लिए इस कार्यालय में विगत 25 अगस्त, 2022 को 'आज़ादी का अमृत महोत्सव' हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदय की अनुप्रेरणा से कार्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ पर कार्यालय में 75 पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण की ओर ध्यान आकर्षित किया गया तथा स्वस्थ भारत के निर्माण का संकल्प लिया गया। आज़ादी के 75वें वर्ष के सम्मान में मानव तिरंगा बनाया गया जिसमें कार्यालय के 75 पुरुष और महिला कर्मियों ने भाग लिया। मानव तिरंगे में पुरुष-कर्मियों के सरिया एवं सफेद रंग में तथा महिला-कर्मियों हरे रंग के परिधान में थी।



अधिक मान-बड़ाई श्रेष्ठ मानवता के लिए हानिकारक

श्री लालमणि शर्मा

सेवा निवृत्त टी. आई.

मान-बड़ाई मीठा विष है। यह प्राप्ति में बड़ी मधुर लगती है, मगर आदर्श पुरुष को सहज सन्मार्ग से भ्रष्ट कर देती है। मान-बड़ाई चाहने वाले मनुष्य को दंभ, छल, ईर्ष्या, द्वेष, बैर आदि अनेक दोषों का शिकार बना देती है। कहावत है कि “हार पहनने वालों की हार होती है”। कभी कोई मान बड़ाई करे तो यह नहीं समझना चाहिए कि हममें यह गुण है और इन्हीं गुणों के कारण मैं अन्य लोगों में बड़ा हूँ। यदि कोई मानव बड़ाई का आदी हो जाता है तो उसके अंदर अभिमान बढ़ जाता है और यदि मान प्रिय लगने लगे तो उसमें और बड़ाई की चाह बढ़ जाती है। मान मनुष्य के लिए बड़ा घातक है, किसी ने ठीक कहा-

“मान करन से भरण है रहा न जिनका वंश”
तीनों को तुम देख लो रावण, कौरव, कंस”।

आजकल बड़े-बड़े लोगों में अपनी प्रशंसा कराने का, अपनी चापलूसी कराने की आदत पड़ गई है। जो गुण उनमें विद्यमान नहीं है उन्हें वे अपने में होना दिखाते हैं, दूसरों के सारे गुणों को अपने अंदर होना सुनना चाहते हैं। अतः उनके अंदर सद्गुणों का बना रहना बंद हो जाता है। यह परम्परा आदर्श समाज के लिए हानिकारक है। श्रीरामचरितमानस में लेख है:-

“सचिव बैद, गुरु तीनि जौ, प्रिय बोलहिं भय आसा।

राज धर्म तन तीनि कर, होइ बेगिहीं नासा।।

अपनी मिथ्या प्रशंसा और मिथ्या गुण श्रवण के आदी होने वाले लोगों का आगे चलकर पतन शुरू हो जाता है। झूठी प्रशंसा से लोगों में अहंकार पैदा हो जाता है। अहंकार एक मीठा जहर है जो भीड़ से, समाज से, बाहर से उनके अंदर थोप दिया जाता है। किसी ने मान और मद के बारे में ही ठीक ही कहा है-

“मद में भूल नहीं जाना तुम, मान नहीं सुख का दाता।
मानव धर्म का पालन कर लो, पाने का अक्षण सुख सरता।

बलशाली रावण को देखो, मान वश स्वपतन किया।
अपने ही हाथों से उसने, अपना जीवन खत्म किया।”

मान अच्छा लगता है मगर उसका परिणाम बुरा है। अभिमान जड़ पदार्थों का होता है। स्वाभिमान सत्य आचरण का होता है। व्यक्ति जन्म से नहीं, कर्म से महान होता है। कुल से नहीं कुलाचार की परम्परा से महान होता है। आटा जितना महीन होगा रोटी उतनी ही मुलायम बनेगी। उसी प्रकार अहम जितना शून्य होगा प्रेम उतना ही आकर्षक होगा, लोगों की सम्मान पाने की चिंता ने उन्हें उपद्रवी व दम्भी बना दिया है। सम्मान पाने का इच्छुक व्यक्ति अपने को अच्छा और दूसरे को बुरा समझने लगता है। अपने को बलवान और दूसरे को कमजोर समझने लगता है। ऐसे लोगों के बारे में कहावत है -

“हाथ पैर में दम नहीं, पर हम किसी से कम नहीं” मान बड़ाई बुद्धि पर आक्रमण करती है और विवेक को मूर्छित कर देती है।

अपराधी और दुराचारी व्यक्तियों को उनके आपराधिक कृत्यों के संबंध में और मान बड़ाई मिलने लगती है तो वह और अपराध व दुराचार करने लगता है। पहले समाज में यदि कोई व्यक्ति किसी की हत्या कर देता था तो पूरा समाज उसका बहिष्कार कर देता था, उसका हुक्का-पानी, शादी-विवाह भी समाज में बंद हो जाते थे। वह समाज में अलग-थलग पड़ जाता था। समाज के भय से लोग अपराध नहीं करते थे। वर्तमान में परिस्थितियाँ बदल गई हैं। हत्यारोपी अपराधी महिमा मंडित होने लगे हैं जिससे वर्तमान में अपराध बढ़ने लगे हैं। पहले कुछ अपराधी थे जो समानांतर सरकार चलाने का प्रयास करते थे। लेकिन अब तो कुछ अपराधी ही सरकार की कुर्सी पर बैठने लगे हैं। जिनके हाथ में हथकड़ी होनी चाहिए वे माला

पहन रहे हैं। जिनका तिरस्कार और अपमान होना चाहिए वह सम्मान पा रहे हैं। किसी संत का कहना ठीक है –

“बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।

भलौ भलौ कहि छोड़ियै, खोटें ग्रह जपु दानु”॥

दुनिया के लोग आपको अच्छा मानते हैं, आपका बड़ा यशगान करते हैं, पूजा करते हैं, इससे कभी यह नहीं सोचना कि आप वास्तव में श्रेष्ठ और अच्छे मानव बन गए हैं। अच्छे मानव, मन निर्मल होने के बाद, कुविचार और कुभाव के नष्ट होने पर ही बनते हैं। अपने जीवन के बीते हुए तथा वर्तमान कार्यों की ओर देखकर आत्म-

-निरीक्षण करें कि आप दूसरों के कहने पर अपने को अच्छा मान रहे थे, यह आपकी भूल थी। अब आप अंदर की बुराइयों पर चिंतन करेंगे तो अन्य लोग आपसे अच्छे दिखने लगेंगे। भगवान ने हमें बड़ा बनाया है यह भगवान की कृपा है मगर हमें छोटे बन कर ही जिंदगी जीनी चाहिए। भगवान के अवतार होते हुए भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन का रथ चलाया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम पिता के आदेश पर वन गए, शबरी के जूटे बेर खाए, इसलिए मानव में भी लघुता निभाने एवं प्रभुता को पचाने की प्रकृति होनी चाहिए।



‘नमंति फलनो वृक्षाः, नमंति गुणिनो जनाः,

शुष्क काष्ठाश्च मूर्खश्च न नमंति कदाचन ॥’

फल वाले वृक्ष और गुणवान व्यक्ति झुक जाते हैं। सूखे वृक्ष और मूर्खजन कभी नहीं झुकते हैं।



उधार लेने और न चुकाने की कला

श्री मदन गोपाल शर्मा

सेवा निवृत्त वरिष्ठ लेखापाल

आप माने या न माने पर यह कटु सत्य है कि उधार लेना अपने आप में एक विशिष्ट कला है और इस कला में माहिर लोग न चाहते हुए भी आपकी जेब से पैसा निकलवाने में सफल हो जाते हैं। उधार लेने-देने का काम अनादि काल से चलता रहा है। हमारे प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में ऋण लेकर घी पीने का उल्लेख है, साथ ही यह भी कहा गया है कि ऋण चुकाने की चिन्ता करने की आवश्यकता कतई नहीं है क्योंकि भस्म देह का पुनरागमन संभव नहीं है, जिससे कि उधार वसूला जा सके। पुराने जमाने में हो सकता है उधार लेना अच्छा न माना जाता हो पर आज तो उधार बड़े-बड़े पूंजीपति लेते हैं, यह बात अलग है कि वे बिना उधार चुकाये भाग जाते हैं, सब कुछ होते हुए भी दिवालिया घोषित हो जाते हैं। उधार सरकारें भी लेती हैं और शान से घोषित करती हैं कि हम पर इतना उधार बकाया है और इतना ब्याज हर साल दे रहे हैं।

उधार लेने की कला आसान नहीं है और हर कोई इस कला में पारंगत हो भी नहीं सकता। खास तौर पर क्रोधी व शर्मसार लोग तो इस कला को सीखने में असफल ही सिद्ध होते हैं। वाक पटुता, चालाकी, छल, मिथ्या कथन, धूर्तता और मृदुभाषी होना इस कला को सीखने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। किसी से भी उधार लेना और वह भी बिना ब्याज के बहुत कठिन काम है पर ऐसे लोग इसमें सफल हो जाते हैं। अपने संपर्क और तथाकथित सद्व्यवहार से ऐसे लोग सामने वाले को प्रभावित कर लेते हैं। वे ऐसी भूमिका बनाते हैं कि उधारदाता पिघल जाता है और उसे लगता है कि उधार लेने वाला वास्तव में अचानक संकट में फँस गया है और उसकी आर्थिक सहायता की जानी चाहिए। वैसे तो उधार लेने वाले के कथनानुसार वह संपन्न आदमी है और अचानक हुई घटना के कारण उसे धन की आकस्मिक आवश्यकता पड़ गई है। कुछ दिन के लिए या पहली तारीख तक के लिए ही धनराशि मांग रहा है। आमतौर से

जिन कारणों से ऋण माँगने की बात आती है, उनमें घर के किसी सदस्य का अकस्मात बीमार होना या दुर्घटनाग्रस्त होना, अस्पताल में भर्ती होना, किसी रिश्तेदार की मौत होना, कहीं अचानक जाने का कार्यक्रम बनना, पुलिस आदि के संकट में फँसना, बच्चों का व्यावसायिक कोर्स में एडमिशन कराना, किसी सामाजिक व धार्मिक कार्य में सहयोग का झूठा बहाना बनाना आदि कई कारण हो सकते हैं। इन कारणों की प्रस्तुति का ढंग ही सबसे महत्वपूर्ण होता है जिससे दया और करुणा जागृत हो जाती है और मन परोपकार करने के लिए द्रवित हो जाता है। आदमी तुरंत धन राशि दे देता है और उदार स्वैया अपनाते हुए कह देता है कि कोई बात नहीं भाई-साहब, संकट तो सभी पर आते हैं, आप चाहे तो एकाध महीने पश्चात भी धन राशि वापस कर सकते हैं। समस्या तो तब आती है, जब कोई पहली तारीख निकल जाती है और महाशय के दर्शन भी नहीं होते और पता चलता है कि वह महाशय दर्जनों लोगों से इसी तरह उधार लेकर धनराशि हड़प चुके हैं।

उधार न चुकाने की कला, उधार लेने की कला से भी ऊँची कला है, शरीफ लोग तो एक दो बार तकादा करते हैं फिर माँगना ही छोड़ देते हैं पर अगली बार रुपये उधार नहीं देते। कई बार चतुर लोग उधारदाता की कमजोरियों का बखान कर और सहायता व समर्थन करने के नाम पर दूसरी बार भी उधार लेने में सफल हो जाते हैं। कुछ लोग पीछा नहीं छोड़ते और लगातार उधार वापसी का तकादा करते ही रहते हैं। ऐसे लोगों के लिए हर समय नया बहाना बनाना पड़ता है और शीघ्र वापसी का आश्वासन देना पड़ता है। ऐसे लोगों से दोबारा उधार मिलने की संभावना नहीं रहती। एकाध आदमी उधार का रुपया वापिस न मिलने पर उग्र रूप धारण कर लेते हैं और

तुरंत रुपया वापिस करने को कहते हैं। ऐसे लोगों को शांति से घर में बैठकर समझाना पड़ता है और दो तीन महीने के बाद की तारीख का चेक देकर शांत करना पड़ता है। इस तरह दो तीन महीने शांति रहती है। चेक बाउंस होने पर और रुपया माँगने पर इस बार किश्तों में रुपये वापसी का प्रस्ताव व पहली किश्त की राशि देनी पड़ती है। सामने वाला आदमी कितनी भी गर्मी दिखाये पर मरता क्या न करता। उसे उधार लेने वाले का प्रस्ताव मानना ही पड़ता है, क्योंकि वह जानता है कि उसके घर चक्कर लगाने में हजारों रुपयों का पेट्रोल खर्च हो चुका है इसलिए जो मिल रहा है और जैसे मिल रहा है, समझौता करना ही अच्छा है।

उधार लेने वाला समझौते के साथ एक शर्त यह भी रखता है कि मेरी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है इसलिए आपको तकलीफ हो रही है। पर मेरा निवेदन है कि आप मेरी बदनामी नहीं करेंगे और इस विषय में किसी से कुछ नहीं कहेंगे अन्यथा अन्य लोग मेरे घर का घेराव कर देंगे और आपके शेष पैसों की वापसी पर संकट आ जाएगा। यह फॉर्मूला ऐसा है जिसमें मार भी पड़ती है और रोना भी सम्भव नहीं है। शायद इसीलिए कुछ लोग किसी भी स्थिति में किसी को रुपया उधार नहीं देते। बहुत विषम स्थिति में यदि देना भी पड़े तो उसे उधार नहीं सहायता राशि मान कर रुपये दे देते हैं और भूल जाते हैं।



“याद रखिए सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना और गलत के साथ समझौता करना है” - नेताजी सुभाष चंद्र बोस





अतीत

श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा
लेखापाल

अतीत हर किसी का होता है और हर अतीत की कोई न कोई कहानी होती है। फर्क इतना है कि कुछ कहानियाँ किताबों में जगह बनाती हैं, कुछ अखबारों में। पर जरूरी नहीं है कि हर कहानी लोगों के सामने आ ही जाए। ऐसी बहुत सी कहानियाँ हैं जो न जाने कितनों के सीने में दफन हैं और वे किसी एक या किसी मामलों में दो चार लोगों तक ही सीमित हैं। इनका भी अपना अलग महत्व है। जो कहानियाँ बाहर नहीं आ पातीं वे आजन्म मस्तिष्क में बनी रहती हैं जो चाह कर भी इंसान नहीं भूल पाता। ये कहानियाँ कुछ ऐसी घटनाओं से मिलकर बनी होती हैं जो कभी-कभी आपको ऐसे अहसास दिलाती हैं जो आप जीवन पर्यंत नहीं भूल पाते हैं। कुछ घटनाएं जीवन और मृत्यु के बीच संघर्षों से संबंधित होती हैं तो कुछ आपके द्वारा अतीत में की गई भूलों से जुड़ी होती हैं और आपको मनुष्य होने के नाते अहसास दिलाती हैं कि आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था भले ही वो गलती किसी भावावेश में आकर क्यों न की गई हो। ऐसी ही कुछ कहानियाँ मेरे जीवन में भी घटित हुई हैं जो मैं यहाँ पर आप लोगों के सामने रखने की कोशिश कर रहा हूँ।

मेरा संबंध एक किसान परिवार से है और इस कार्यालय में आने से पहले मेरा मुख्य व्यवसाय खेती ही था। हालाँकि मेरे पिताजी अभी भी इस परम्परा का निर्वहन पहले की तरह आज भी उसी लगन एवं मेहनत से कर रहे हैं भले ही इस क्षेत्र में पहले की अपेक्षा मुश्किलें आसान भी हुई हैं और कठिन भी। खेती के साथ पढ़ाई जारी रखना ग्रामीण परिवेश के छात्रों के लिए एक चुनौती रहती है जो मेरे लिए भी थी। मेरी रुचि खेती में थी जो अभी भी है, हालाँकि यह बात अलग है गांव से दूर होने के कारण उतना समय अब नहीं दे पाता हूँ।

बात यही दिसंबर 2014 के आसपास की है। गेहूँ के खेत में पानी लगाने के लिए मैं पंपिंग सेट खेत को ले जाने

से पहले उसे स्टार्ट करने का प्रयास कर रहा था परंतु वह स्टार्ट नहीं हो रहा था। चूंकि धान की फसल में अंतिम सिंचाई एवं गेहूँ की फसल में प्रथम सिंचाई में तकरीबन दो माह का अंतराल रहता है और कभी-कभी बारिश हो जाने पर यह अंतर और भी बढ़ जाता है। पम्पिंग सेट का उपयोग ज्यादा दिन से हुआ भी नहीं था और उसमें कुछ खराबी आ गई थी जिसकी वजह से वह स्टार्ट नहीं हो रहा था। मुझे भी पम्पिंग सेट के बारे में थोड़ा बहुत ज्ञान था। एयर निकालने, इंजन की स्पीड घटाने एवं बढ़ाने एवं मोबिल ऑयल बदलना मैं अच्छी तरह से जानता था।

नॉजिल-प्लेंजर के बारे में मेरी जानकारी थोड़ी बहुत ही थी तो मैं लगा दिखाने अपनी मिस्त्रीगिरी। ठंड में जब कभी इंजन स्टार्ट नहीं होता है तब उसे “लूका” दिखाया जाता है कि एक डंडे में पुराना कपड़ा, मिट्टी के तेल में भिगोकर, उसमें आग लगाकर, इंजन के साइलेंसर के पास ले जाया जाता है फिर हैंडल लगाकर जब इंजन को धीरे-धीरे चलाया जाता है तब उस लूके की लपटें इंजन में प्रवेश करती हैं। मैंने इस नाटक का भी प्रयोग किया परंतु असफलता ही हाथ लगी। अंत में मैंने इंजन की नॉजिल को पूरी तरह खोल दिया और फिर हैंडल लगा दिया। मेहनत रंग लाई और इस बार इंजन स्टार्ट हो गया। हमारे साथ इस मिशन में लगे सभी लोगों के चेहरे पर मुस्कान आ गई, जिसमें मेरा भाई भी शामिल था। मुझे थोड़ी देर के लिए स्वयं के प्रति अहं भाव की अनुभूति हुई। स्टार्ट होने के बाद मैंने उसे 2-3 मिनट ऐसे ही चलने दिया कि बहुत दिनों बाद ऑन हुआ है तो थोड़ा रवां हो जाएं।

जब मैंने इंजन बंद करना चाहा, तब वह बंद नहीं हो रहा था। अब क्या करें सबने बारी-बारी से प्रयास किया परंतु इंजन बंद नहीं हो सका। बिना पानी खींचे या

कहे कि बिना कोई लोड के खाली इंजन का चलना खतरनाक होता है और उसके फटने की संभावना ज्यादा होती है। इसलिए सिंचाई करते समय इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि बोरिंग से पानी लगातार आ रहा है अथवा नहीं। इसलिए अब सब लोग हैरान परेशान कि इंजन आखिर बंद हो तो हो कैसे?

अब एक ही रास्ता बचा था कि कैसे भी डीजल निकाला जाए तभी यह बंद हो सकता है। चूंकि मैंने उसी दिन पांच लीटर डीजल भरा था अतः उसे खाली करने में भी समय लगना था और ऊपर से इंजन भक-भक चले ही जा रहा था और सभी की धड़कनें इंजन की स्पीड के साथ ही बढ़ती जा रही थी। डीजल निकालने के लिए कुछ नट-बोल्ट भी खोलने पड़ते और उसमें भी समय लगना था। नॉजिल पूरी तरह खुली हुई थी इसलिए डीजल निर्बाध रूप से इंजन तक सप्लाई हो रहा था। अतः इंजन अपनी पूरी क्षमता के साथ तेज आवाज करते हुए चल रहा था। उसकी तेज आवाज सुनकर, गांव के और भी लोग उसके चारों तरफ इकट्ठा हो गए जैसे कोई मदारी खेल दिखाने आया हो। समय हाथ से फिसलता जा रहा था और मेरे मन में ढेर सारी बातें चल रही थीं। इंजन चलने की भयावह रफ्तार देखकर कोई भी इंजन के पास जाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था। मेरे लिए इंजन को इस हाल में छोड़ देना बहुत ही मुश्किल था क्योंकि यह इंजन ही मेरी अर्थव्यवस्था एवं खेती की रीढ़ थी। कभी-कभी मैं इस इंजन की सहायता से दूसरों के खेतों में पानी लगा कर कुछ पैसे इकट्ठे कर लेता था। मैंने वहाँ पर पड़ा हुआ वही खाली डिब्बा उठाया जिस से अभी इंजन में डीजल भरा था और 14-17 का पाना लेकर हिम्मत करते हुए इंजन की तरफ बढ़ा कि चाहे सर फूटे या हाथ टूटे इंजन को बंद करके ही रहूँगा। नट खोलते हुए मेरे हाथ डर से कंपकंपा रहे थे और जिसकी वजह से पाना भी हाथ से बार-बार गिर जा रहा था। सभी लोग चिल्ला-चिल्ला कर मुझे वापस आने के लिए कह रहे थे। पर मैं उन सभी की बात अनसुनी करके अपने काम में लगा रहा जिसका सूत्रधार भी मैं ही था। टंकी से इंजन की ओर जाने वाली पाईप खोल कर उसका मुंह अपने साथ लाए खाली डिब्बे में लगा दिया।

इंजन बचाने का इतना काम तो मैंने कर दिया था। पर अब मुझे डीजल बचाने की चिंता ने घेर लिया। उस पाईप

से डीजल जिस रफ्तार से निकल रहा था कि टंकी खाली होने में 4-5 मिनट का समय जाना था और ये 4-5 मिनट भी सदियों जैसे लग रहे थे। टंकी से इंजन में डीजल की सप्लाई बंद हो चुकी थी परंतु नॉजिल में अभी भी इतना तेल बचा था कि इंजन 2-3 मिनट और चलता। मेरा मन वहाँ से हटने को नहीं हो रहा था जबकि वहाँ इकट्ठे हुए सभी लोग मुझे वापस आने के लिए आवाज लगा रहे थे। वे सभी मेरे लिए परेशान थे परंतु मैं उस डीजल को व्यर्थ बहते हुए नहीं देख सकता था। अंत में मेरे एक चाचा जी भागते हुए आए और मेरा हाथ पकड़ कर खींच ले गए। मैं भी अपने दूसरे हाथ से वो डिब्बा पकड़े रहा जिसमें तकरीबन 3 लीटर तेल आ चुका था। जितनी तेज उधर इंजन की रफ्तार थी उस से भी कहीं ज्यादा तेज मेरे दिल की धड़कन चल रही थी जो समय के साथ बढ़ती ही जा रही थी। पाईप से लगातार तेल निकल कर इंजन के आस-पास ही फैल रहा था और हम सभी मूक दर्शक बनकर इंजन के बंद होने का इंतजार कर रहे थे। लगभग 2-3 मिनट बाद जब नॉजिल का तेल भी खत्म हो गया और इंजन तेल सप्लाई बंद होने के कारण इंजन आखिरकार बंद हो गया।

इस पूरे झमेले में इंजन 10-12 मिनट चला होगा और ये 10-12 मिनट मुझे जैसे अंतहीन सैकड़ों सालों जैसे लग रहे थे जैसे कि यह सब खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था। जब इंजन बंद होने के बाद, इंजन के हेड को छूकर देखा तो वो जलते हुए अंगारे की तरह भभक रहा था। मैं ये तो नहीं जानता कि इंजन कितनी देर और चलता परंतु मैं अपनी इस भूल और घटना को जब भी याद करता हूँ तो मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं जिससे मेरे पूरे शरीर में एक सिहरन दौड़ जाती है।

एक ऐसी ही घटना मेरे साथ और घटी जो रोमांचकारी तो नहीं थी पर उसकी याद आते ही मेरा मन आत्मग्लानि से भर जाता है। मैं बचपन में क्रिकेट बहुत खेलता था जो आमतौर पर लगभग सभी भारतीय बच्चे खेलते हैं। फुटबॉल, हॉकी और अन्य खेलों के बारे में बस सुन रहा था। परंतु जो दीवानगी क्रिकेट के प्रति थी वो किसी और खेल के प्रति नहीं थी। मेरी उम्र लगभग 16-17 वर्ष रही होगी, गर्मी की छुट्टियों में मामा के घर

गया हुआ था। आमतौर पर मेरी गर्मी की छुट्टी का एक महीना वहीं ननिहाल में ही बीतता था। वहां मेरी दोस्ती कई लड़कों से थी पर मेरी घनिष्ठ मित्रता उमेश से हो गई जो रिश्ते में मेरे मामा भी लगते हैं और मेरी उनसे कुछ ज्यादा ही बनती है। सभी लोग रोज साथ में क्रिकेट खेलते थे और नदी में नहाने जाया करते थे। ऐसे ही हम एक दिन क्रिकेट खेल रहे थे। उस दिन मेरे घनिष्ठ मित्र श्री उमेश उर्फ मेरे मामा जी आउट होने का नाम ही नहीं ले रहे थे। हम सभी उन्हें बॉलिंग करते-करते थक गए और वह विकेट पर ऐसे अविचल खड़े रहे जैसे एक बार ब्रायन लारा 400 रनों की पारी बनाने के समय डटे हुए थे। कभी-कभी हम लोग अकेले ही बैटिंग करने वाला क्रिकेट खेलते थे। उस दिन भी ऐसा ही खेल चल रहा था और वे लगातार अच्छी बैटिंग कर रहे थे। मेरी गेंदबाजी पर तो उन्होंने तकरीबन 10-12 छक्के ऐसे जड़े होंगे जैसे 2007 के ट्वेंटी-ट्वेंटी वर्ल्ड-कप के दौरान युवराज सिंह ने स्टुअर्ट ब्राड के एक ओवर में छः छक्के जड़े थे। उनसे लगातार मार खाते हुए मैं खीझ से भर उठा था क्योंकि उनके बाद मेरी बल्लेबाजी की बारी थी और वो आ ही नहीं रही थी। उमेश 25-30 ओवर खेलने के बाद जैसे-तैसे आउट हुए तब कही जाकर मेरी बारी आई और मैंने भी मन ही मान ठान लिया था कि मैं भी ऐसे ही मजा चखाऊंगा। अब मेरी बारी थी और मैं सोच रहा था कि मुझे आउट नहीं होना है, युवराज न सही धोनी ही सही कि मुझे देर तक खेलना है। पहला ओवर मेरे ममेरे भाई प्रकाश का था, वह गेंदबाजी करने आए। पहली गेंद, ओवरपिच, जिसको मैंने इतने सुरक्षात्मक ढंग से खेला जैसे कि मेरी उस दिन की सारी तपस्या उसी गेंद को समर्पित हो और उसे देखकर राहुल द्रविड भी शरमा जाए। अगली गेंद जो थोड़ी शोर्टपिच थी उस पर मैं ललचा गया और मैंने अपनी पूरी ताकत से सहवाग की तरह खड़े-खड़े अपना बल्ला घुमा दिया, पर किस्मत को जैसे कुछ और ही मंजूर था, गेंद बल्ले की बाहरी किनारे को लगी और वही पर हवा में उछल गई। विकेट-कीपिंग का काम मेरे वही घनिष्ठ मित्र श्री उमेश जी कर रहे थे जो अभी-अभी हमारी पिटाई कर के आए थे, उन्होंने कैच पकड़ने के लिए दौड़ लगा दी और मैं ईश्वर से प्रार्थना कर रहा था कि यह कैच छूट जाए, पर उन्होंने धोनी की तरह एक शानदार “डाइव” लगा कर गिरते हुए कैच को लपक लिया। मैं अपना उतरा सा मुंह लिए मूक दर्शक बन

कर अपना विकेट जाते हुए देख रहा था। एक तो अपने घनिष्ठ मित्र श्री उमेश जी को खिलाते हुए इतने ज्यादा ओवर गेंदबाजी एवं क्षेत्ररक्षण किया और ऊपर से दूसरी गेंद पर ही आउट। मेरा मन बैट छोड़ने का नहीं कर रहा था। मेरे मन में एक उपाय सूझा, वही उपाय जिसके लिए मेरा मन आज भी आत्मग्लानि से भर जाता है, जिसके लिए ये संस्मरण लिखा। मैंने आस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग की तरह हथकंडे अपनाते हुए कहा कि कैच लेते समय गेंद जमीन को स्पर्श कर चुकी थी तो मैं आउट नहीं हुआ हूँ। अब वहाँ कौन से टी.वी. अम्पायर बैठे हुए थे जो इस बात का फैसला करते और ना ही आज के समय जैसा कोई डी.आर.एस. वाला विकल्प मौजूद था। चूंकि उमेश जी ने डाइव लगा कर कैच पकड़ा था तो और खिलाड़ियों के मन में थोड़ा-बहुत संशय था, परंतु मैं और साथ-साथ वह भी यह बात जानते थे कि कैच पूरी तरह से सुरक्षित रूप से लिया गया था। थोड़ी बहुत तकरार होने के बाद मुझे फिर से बल्लेबाजी करने का मौका दे दिया गया, पर उनके मन में निराशा के भाव थे। चूंकि अगर कोई खिलाड़ी छोटा-बड़ा हो या खेल प्रदर्शन में अंतर ज्यादा हो तो बल्लेबाजी दी जा सकती थी। हमउम्र एवं लगभग समान खेल प्रदर्शन होने के कारण उनके लिए यह असह्य था। मुझे याद नहीं कि उसके बाद मैंने कितने रन बनाए, कितनी देर और खेला, पर मेरा मन पश्चाताप से भर गया था।

मैं इस बारे में उनसे कभी बात नहीं कर पाया पर मेरे मन में समय-समय पर मेरी यह बेईमानी स्मरण होती रहती है। इस घटना को कई वर्ष बीत चुके हैं, हो सकता है उन्हें यह सब याद भी हो या नहीं फिर भी जब भी मैं किसी को आउट होते हुए देखता हूँ और वह बैट छोड़ने में आनाकानी करता है तो मुझे यह घटना सहसा स्मरण हो जाती है।

ऊपर की दोनों घटनाएं मेरे जीवन की भयानक भूलों में से हैं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वे मुझे भविष्य में ऐसी जानी-अनजानी भूलों से बचाते रहें।





एकल परिवार का दंश

सुश्री प्रीति सिंह

वरिष्ठ अनुवादक

बात उन दिनों की है जब सोनाली अपने पति और दो वर्षीय बेटे के साथ गाजियाबाद के शालीमार गार्डन में रहा करती थी और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रही थी। उन्हीं दिनों उसके अबोध बेटे ने कुछ ऐसा किया जिससे एकल परिवार की पीड़ा उसके अंतस्तल को सालने लगी।

सोमवार का दिन था। नवंबर माह की गुलाबी ठंड दस्तक दे चुकी थी। मंद-मंद बहती ठंडी बयार फिज़ा में शीतलता बिखेर रहीं थी। अभी हफ्तेभर पहले बेटे का दूसरा जन्मदिन मनाया गया था। सुबह के 11:00 बजे होंगे। बच्चे को सुलाकर वह नहाने गई। बाथरूम में अंदर गए हुए उसे अभी पाँच मिनट ही हुए थे कि बच्चा उठ गया और बाथरूम का दरवाजा भिड़ा देख खोलने का प्रयास करने लगा और अनजाने में बाथरूम के दरवाजे की सिटकिनी बाहर से लगा दी। जब सोनाली ने दरवाजा खोलना चाहा तब दरवाजा नहीं खुला। उसने दरवाजे को बहुत हिलाया डुलाया किंतु सारा प्रयत्न निष्फल रहा। घर के सारे दरवाजे और खिड़कियाँ भी अंदर से बंद थी। बाहरी दुनिया से संपर्क करने का कोई साधन नहीं था। हर तरफ सन्नाटा ही सन्नाटा था और उस सन्नाटे के बीच अगर कुछ सुनाई दे रहा था तो वह था अंश का रोना। सोनाली बाथरूम के अंदर और अंश बाथरूम के बाहर, दरवाजे पर खड़ा था। माँ बेटे में दरवाजे भर का फासला था पर मीलों सा लग रहा था। बाहर खड़े अंश का हाल बुरा था, रो-रोकर। सोनाली अंश के बारे में सोच-सोचकर व्यथित थी। वह मन ही मन कामना कर रही थी कि कोई जादू हो जाए और बाथरूम का दरवाजा झट से खुल जाए।

बाहर निकलने का कोई और उपाय न सूझता देख सोनाली ने दूसरे अपार्टमेंट की ओर खुलती बाथरूम की

खिड़की खोली। बाथरूम से उस अपार्टमेंट की सीढ़ियाँ साफ दिखाई देती थी। वह क्या करे! सोच ही रही थी कि तभी एक आदमी को सीढ़ियों की ओर बढ़ते देखा। उसे आशा की एक किरण नजर आयी। वह एकाएक चीख उठी -हेलो! “हेलो भइया!” वह आदमी वहीं रुक गया और इधर-उधर देखने लगा। सोनाली समझ गई कि उसकी आवाज उस आदमी के कानों तक पहुँच रही है। उसने और जोर से आवाज लगाई -हेलो भइया! मैं अपार्टमेंट नं. 30 के सेकेंड फ्लोर के फ्लैट नं. 205 से बोल रही हूँ। मेरे दो साल के बेटे ने अनजाने में मुझे बाथरूम में बंद कर दिया है। मैं बाथरूम के अंदर हूँ और बेटा बाथरूम के बाहर। मेन डोर भी बंद है। प्लीज किसी तरह मेरी मदद कीजिए।”

उस आदमी ने भी जिम्मेदार नागरिक की भूमिका निभाते हुए सोनाली के अपार्टमेंट के गार्ड को सारी बातें बतायीं। गार्ड ने नीचे से ही पुकारा - “क्या हुआ मैडम!” “मेरे बेटे ने मुझे बाथरूम में बंद कर दिया है”- उसने तत्परता से जवाब दिया। “बेटे ने बंद कर दिया है ! वह तो बहुत छोटा है?”- गार्ड ने संदेह भरे लहजे में पूछा। “अरे! बच्चा सो रहा था। मैं नहाने चली गई और तभी वह उठ गया। बाथरूम का दरवाजा भिड़ा देखकर उसने खोलने की कोशिश में बाहर से चिटकनी लगा दी। अब मैं बाथरूम के अंदर हूँ और बच्चा बाथरूम के बाहर। किसी तरह से दरवाजा खुलवाओ भैया।”-सोनाली बिना रुके एक ही साँस में पूरी बात कह गई। “देखता हूँ मैडम”- यह कहते हुए गार्ड वहाँ से चला गया।

गार्ड को पूरी घटना बताए हुए तकरीबन आधा

घंटा बीत चुका था किंतु मेन डोर खोले जाने का कोई प्रयास किया भी जा रहा है अथवा नहीं, इसकी कोई सुगबुगाहट उसे नहीं मिल रही थी। इसी बीच अपार्टमेंट के संकुल में झाड़ू लगाने वाली दो बाइयों की बातचीत उसके कानों में पड़ी। एक ने कहा-“अरे! सुना, प्लैट नं. 205 वाली जनानी अपने मरद से लड़कर खुद को बाथरूम में बंद कर ली है।” अन्य आवाज आयी - “कुछ कर न ले।” उनकी बातें सुनकर सोनाली का मन हुआ कि पलटकर जवाब दे दे किंतु परिस्थिति को देखते हुए कुछ न बोलना ही मुनासिब समझा। उसने महसूस किया कि ऐसी ही बेसिर पैर की बातें दूसरों के लिए मसालेदार खबरे बनती हैं और हममें से अधिकांश लोग बिना सच्चाई जाने इन अफवाहों पर विश्वास कर लेते हैं। खैर, इस समय सोनाली का पूरा ध्यान इस ओर था कि किसी तरह से दरवाजा खुल जाए और वह अपने बच्चे को देख सके।

अंश अब तक रोकर शांत हो चुका था और बाथरूम के दरवाजे से सटकर खड़ा हो गया था। वह रह-रहकर पुकारता - मम्मा! दरवाजा खोलिए। एकाएक अपार्टमेंट के सेक्रेटरी ने नीचे से ही आवाज लगाई - “मैडम मैं थोमस बोल रहा हूँ। “चिंता मत कीजिए, प्लंबर को बुलाया है। मेन डोर के ऊपर बने रोशनदान का पैनल काटना पड़ेगा” - उसने सांत्वना देते हुए कहा। “ठीक है सर” - बेबस सोनाली ने कहा। इसी बीच इकट्ठा होती भीड़ की आवाज उसके कानों तक गूंजने लगी। अब दरवाजा जल्द ही खुल जाएगा, इसका विश्वास उसे हो चला। प्लंबर आया और मेन डोर के ऊपर बने रोशनदान में लगी शीशे की पट्टिका काटी। भीड़ में से एक आदमी उस झरोखे से अंदर आया और उसने सबसे पहले लकड़ी का दरवाजा (मेन डोर) खोला फिर लोहे की लगी जाली खोली और मास्टर बेडरूम में जाकर बाथरूम के दरवाजे की सिटकिनी खोली जो बस हल्के से लगी थी। सोनाली बाथरूम से बाहर निकली तो देखा कि वही सज्जन थे जिसे उसने मदद के लिए सबसे पहले आवाज दी थी। उसने कृतज्ञता भरी और सजल दृष्टि से उसे धन्यवाद दिया, मानो वह उसे ईश्वर का दूत कह रही हो। बाथरूम के दरवाजे से सटकर खड़े अंश को गोद में उठाते हुए मुख्य

द्वार की ओर बढ़ी। पूरा गलियारा लोगों से भरा था। सभी लोग उसे और विशेषकर बच्चे को सुरक्षित देखकर खुशी से ताली बजाने लगे। उसने भी हाथ जोड़कर सभी के प्रति आभार जताया।

इस पूरे घटनाक्रम में तीन घंटे बीत चुके थे। सब कुछ सही सलामत रहा लेकिन इस घटना से सोनाली का मन विचलित हो उठा। उसके मन में विचारों का मंथन चलने लगा। यदि घर पर घर का कोई अन्य सदस्य मौजूद होता तो संभव था यह हादसा रोका जा सकता था। आज उसे अपनों की कमी जबरदस्त खल रही थी।

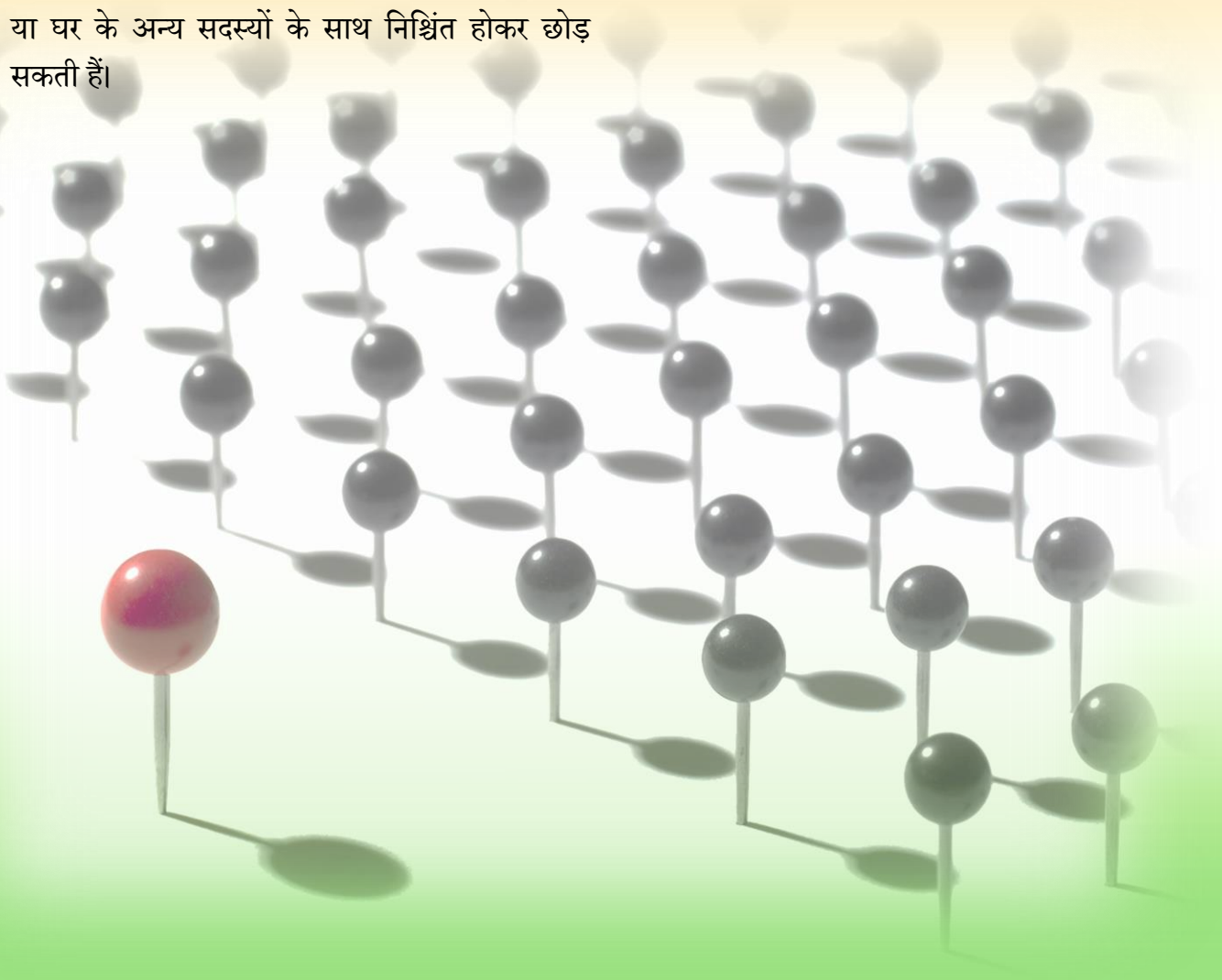
सोनाली के साथ घटित यह घटना एकल परिवारों के दंश का एक उदाहरण मात्र है। ऐसी अनगिनत समस्याओं का सामना आए दिन इन परिवारों को करना पड़ता है। एकल परिवार सोनाली की मजबूरी थी या कुछ और, यह कह पाना मुश्किल था किंतु इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि हमारी सोच में व्यष्टिवाद का प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। पता नहीं समय की मांग है या पाश्चात्य जीवन शैली के प्रति आकर्षण अथवा मानव जाति में बढ़ती असहनशीलता, कारण जो भी हो उसका दुष्प्रभाव हमारे रिश्तों पर भी दिखने लगा है। अब अपनों का महत्व हमारे लिए कम हो गया है। मनुष्य सुख-सुविधाओं के लिए सभी प्रकार के भौतिक साधनों को जुटाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील है किंतु अपने सगे संबंधियों के लिए उसके पास समय नहीं है।

एक समय था जब भारत में संयुक्त परिवार की परंपरा थी। घर का सबसे अधिक वयोवृद्ध पुरुष सदस्य घर का मुखिया हुआ करता था। जीवन का निर्वहन घर के मुखिया के अनुसार होता था। तीज-त्यौहार और मांगलिक कार्यों में सभी सामूहिक रूप से हिस्सा लेते थे। आपस में सामंजस्य की स्थिति थी। बच्चों के पालन-पोषण में माता-पिता के साथ-साथ दादा-दादी और अन्य सदस्यों का भी सहयोग मिलता था। जैसे-जैसे समय बदलता गया, आजीविका और बेहतर

संसाधनों की खोज में मानव एक जगह से दूसरी जगह वास करने लगा वैसे ही संयुक्त परिवार धीरे-धीरे एकल परिवार में बदलता गया। इसके साथ ही रिश्तों में समरसता और अपनापन भी शनैः शनैः समाप्त होने लगा और उसके स्थान पर स्वार्थपरता हावी होने लगी।

आज स्थिति कुछ ऐसी हो गई है कि वृद्ध माता-पिता की देखभाल करने से बचने के लिए उन्हें वृद्धाश्रम में छोड़ दिया जाता है। हम यह भूल जाते हैं कि जितनी जरूरत बड़े-बुजुर्गों को हमारी रहती है उतनी ही जरूरत उनकी भी हमें पड़ती है। विशेषकर कामकाज हेतु जो महिलाएं बाहर रहती हैं उनके लिए घर के बुजुर्गों का साथ रहना नितांत अनिवार्य है। वे अपने बच्चों को दादा-दादी या घर के अन्य सदस्यों के साथ निश्चिंत होकर छोड़ सकती हैं।

यह सत्य है कि परिवार के सभी सदस्यों की सोच एक जैसी नहीं होती जिस कारण घर में नोक-झोंक होना आम बात है। वो कहावत है न कि जहाँ चार बर्तन होंगे वहाँ खनखनाहट तो होगी ही किंतु यह खनखनाहट अकेले रहने से उपजी अकेलेपन से बेहतर है। अगर परिवार में अपनी इच्छाओं को परिवार के अन्य सदस्यों पर थोपने की कोशिश न कर उनकी भावनाओं का सम्मान करें तो रिश्तों को संभालना और संवारना मुश्किल नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि छोटी-छोटी कमियों को नजर अंदाज कर अच्छाइयों पर ध्यान देने की जिससे परिवार के सदस्यों के बीच माधुर्यता और सौहार्दता बनी रहे।





दहेज प्रथा

भारतीय समाज का अभिशाप

श्री गिरधारीलाल गोयल
सेवा निवृत्त वरिष्ठ लेखापाल

सनातन धर्म में 16 संस्कार वर्णित किए गए हैं। विवाह 15वाँ संस्कार है। इस संस्कार का प्रमुख उद्देश्य संतान उत्पन्न कर पितृ ऋण से मुक्त होना है। 16वाँ संस्कार अंत्येष्टि संस्कार, जो कि अंतिम संस्कार है। यह संस्कार व्यक्ति की मृत्यु के उपरांत उसके परिवार के सदस्य विधि-विधान से संपन्न करते हैं। इस संस्कार में प्रमुख भूमिका मृतक या मृतका के पुत्रों की ही होती है। व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उसका वंश उसके पुत्र द्वारा ही अग्रसर होता है और यह क्रम पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता रहता है। यदि किसी व्यक्ति को पुत्र की प्राप्ति नहीं होती है तो वह किसी अन्य व्यक्ति के पुत्र को दत्तक के रूप में ग्रहण करता है। उस दत्तक पुत्र का विवाह करता है।

इस प्रकार एक महत्वपूर्ण धार्मिक एवं अत्यंत पवित्र अनुष्ठान के साथ विधि-विधान से संपन्न किया जाता है। इस प्रकार वंश परंपरा को बनाए रखने के लिए विवाह अनिवार्य संस्कार है। प्राचीन काल में विवाह बहुत हर्षोल्लास के साथ संपन्न होता था। वर-पक्ष और वधू-पक्ष के बीच विवाह में दहेज के लिए कोई मांग या आपस में लेन-देन की बात नहीं होती थी। वधू-पक्ष अपनी खुशी और सामर्थ्य के अनुसार आभूषण, वस्त्र, घरेलू सामान उपहार स्वरूप वर-पक्ष को दिया करता था। वर-पक्ष इसको पाकर प्रसन्न होता था और जो भी मिलता था उसे अपना सौभाग्य समझता था और ईश्वर की कृपा तथा पूर्वजों का आशीर्वाद समझता था। दोनों पक्षों में निरंतर सौहार्द बना रहता था।

समय परिवर्तनशील है। सबसे बड़ा परिवर्तन विवाह संस्कार में देखने को मिलता है। सच तो यह है कि विवाह संस्कार में विकृति आ गई है। आज बिना दहेज के विवाह संपन्न नहीं हो सकता है। दहेज, वधू-पक्ष द्वारा वर-पक्ष को दिया गया धन, वस्तुएं, आभूषण, कार, फ्रिज, कलर टी.वी., बाईक आदि हैं। कहीं-कहीं तो वर-पक्ष द्वारा

दहेज में वधू-पक्ष से मांग भी प्रस्तुत कर देते हैं। दहेज विवाह के लिए पूर्व शर्त बन गई है। आज दहेज एक ऐसी कुप्रथा बन गई है जो भारतीय समाज का अभिशाप सिद्ध हो रही है। विवाह जैसे पवित्र बंधन की गरिमा नष्ट करके भारतीय नारी को संकट में डाल दिया गया है। आज के भौतिक युग में धन को ही अधिक महत्व दिया जाता है। अधिक दहेज प्राप्त करने वालों का समाज में उच्च स्तर समझा जाता है और वे संप्रदांत समझे जाते हैं। यदि विवाह हो भी जाता है और वधू-पक्ष की ओर से दहेज की पूर्ति नहीं होती है तो वधू को मानसिक तथा शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। आज प्रत्येक समाचार-पत्र में दहेज-हत्या के मामले प्रकाशित हो रहे हैं।

इस सामाजिक बुराई के कारण लगभग सभी परिवार त्रस्त हैं। महिलाओं पर अत्याचार किया जा रहा है। परिवार में कन्या का जन्म इसीलिए दुख का कारण बना हुआ है। हर दंपति पुत्र प्राप्ति की आकांक्षा करता है। माता-पिता को कन्या के कारण अनेक प्रकार की समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। हर समय तनाव ग्रस्त बना रहता है। समाज में यह विचारधारा उत्पन्न हुई कि यदि कन्या को अच्छी प्रकार से शिक्षित करा दिया जाए तो दहेज की समस्या से छुटकारा मिल सकता है। लेकिन यह भी निष्फल हुई। जो कन्याएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर प्रतिष्ठित कंपनियों में पदस्थ हैं, उनका विवाह भी बिना दहेज के संपन्न नहीं होता है।

दहेज प्रथा ने समाज में अनेक दोषों तथा बुराइयों को जन्म दिया है। कन्या के जन्म से ही पिता को उसके दहेज की चिंता सताने लगती है। वह अपनी आवश्यकताओं पर अंकुश लगाता है और धन एकत्र करने का प्रयास करता रहता है। समय के साथ महंगाई

और दहेज की राशि भी बढ़ जाती है। जब पिता अपनी कन्या का विवाह करने के लिए विवश हो जाता है तब वह अनैतिक साधनों से धन अर्जित करने का प्रयास करता है। इसके लिए व्यापारी वर्ग कालाबाजारी तथा अपमिश्रण करने लगता है और कर्मचारी तथा अधिकारी-वर्ग रिश्वत लेने लगते हैं जिससे समाज में भ्रष्टाचार पनपने लगता है। कुछ कन्याएं अपने माता-पिता की विवशता देखकर आत्महत्या कर लेती हैं अथवा उनके माता-पिता कन्या के जन्म से पूर्व भ्रूण हत्या करा देते हैं। यद्यपि सरकार ने भ्रूण हत्याएं रोकने के उद्देश्य से गर्भ में लिंग परीक्षण पर कानूनी पाबंदी लगा दी है फिर भी चोरी-छिपे लिंग परीक्षण करा लिया जाता है। गर्भ में यदि कन्या है तो भ्रूण हत्या निश्चित है। समाज में इस जघन्य कृत्य के लिए दहेज प्रथा और कन्या की समाज में सुरक्षा न होना ही प्रमुख कारण है।

दहेज प्रथा के कारण परिवार में कलह बना रहता है। जो वधू अपने माता-पिता के घर से वर-पक्ष की मांग के अनुसार दहेज नहीं लाती है उसके लिए ससुराल में शांतिमय जीवन व्यतीत करना दुष्कर हो जाता है। ससुराल में उसके सास, ससुर, ननद तथा अन्य रिश्तेदारों के ताने सुनने पड़ते हैं। वधू-पक्ष के बारे में अपमानजनक टिप्पणियां की जाती हैं। वर-पक्ष और वधू-पक्ष के मधुर संबंध जो होने चाहिए थे वे कटुता में परिवर्तित हो जाते हैं।

समाज में जब कोई समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है तब सरकार उसके निदान के लिए कानून बनाती है। सरकार ने दहेज रोकने संबंधी कानून लागू किया। लेकिन इसका पालन नहीं हो सका। कानून पुस्तक में ही सिमट कर रह गया। दहेज प्रथा में कोई बदलाव नहीं आया है।



समाज में दहेज निषेध कानून का भय किसी भी पक्ष को नहीं है। दहेज लेना और दहेज देना दोनों कानूनी अपराध हैं। लेकिन समाज में इसका क्रियान्वयन पूर्ण रूप से नहीं हो सका। दहेज प्रथा को कानून द्वारा समाप्त नहीं किया जा सकता है। यह एक सामाजिक बुराई है। सामाजिक चेतना जागृत कर इसे नियंत्रित किया जा सकता है। युवा वर्ग को दहेज न लेने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। युवा वर्ग को दहेज प्रथा से उत्पन्न दुष्परिणामों के प्रति सजग होना चाहिए। दहेज प्रथा के विरुद्ध जबरदस्त लोकमत निर्मित करना चाहिए। समाज में कोई भी कुप्रथा हो तो यह उस बात का संकेत है कि समाज में दहेज प्रथा के अलावा अन्य अनैतिक समस्याएं जैसे भ्रष्टाचार, दुराचार, दूसरे का धन हड़पने की प्रवृत्ति पर नियंत्रण स्वतः हो जाएगा।

आज इस बात की अनिवार्य आवश्यकता है कि परिवार में प्रत्येक व्यक्ति संस्कारवान हो। संस्कार ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को दर्शाता है। परिवार से भी व्यक्ति को संस्कार प्राप्त होते हैं। विवाह तय करते समय वधू-पक्ष को लड़के के गुणों पर ध्यान देना चाहिए, न कि उसके पैकेज पर। यदि पैकेज अर्थात् वेतन अधिक हो और लड़का संस्कार विहीन हो तो ऐसा संबंध कदापि सुखदायक नहीं होगा। दहेज कुप्रथा को समाज के व्यक्तियों द्वारा ही दूर किया जा सकता है। समाज में वर-पक्ष को इस बात के लिए कायल किया जाना चाहिए कि वधू लाने में वर-पक्ष की ही अधिक जिज्ञासा होती है क्योंकि उसे अपने वंश की वृद्धि करनी होती है। वधू के बिना वंश वृद्धि हो ही नहीं सकती है। यह वर-पक्ष का निहित स्वार्थ है। फिर अपनी ही स्वार्थ की पूर्ति के लिए वधू-पक्ष से दहेज की मांग अथवा अपेक्षा क्यों है?

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

- स्वामी दयानंद सरस्वती



कुछ बातें महिलाओं के मन की

सुश्री पुष्पा साहू
कनिष्ठ अनुवादक

**ढोल, गँवार, सूद्र, पसु, नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी॥**

गोस्वामी तुलसीदास की इन पंक्तियों से मुझे जितना क्षोभ हुआ था, उतनी ही राहत हास्य कवि सुरेन्द्र शर्मा जी की उन चार लाइनों से मिली जिसमें उन्होंने अपनी पत्नी जी से इसका मतलब पूछा - "तुलसीदास ने रामचरित मानस में जो लिखा है उसका अर्थ समझती हो या समझाएं?"

तो पत्नी जी ने जवाब दिया - "इसका मतलब तो एकदम साफ है, इनमें एक में मैं, तो बाकी चार में आप हैं।"

बात मुझे भा गई और मैं सोचने लगी कि हर आदमी या औरत अपनी खुन्नस पूरी कौम पर निकालता है। तुलसीदास पत्नी में अति अनुरक्त थे। अति हर चीज की बुरी होती है (अति सर्वत्र वर्जयेत)। परिवारजनों और समाज में पति के उपहास उड़ाए जाने से आहत रत्नावली ने थोड़ा फटकार क्या दिया कि तुलसीदास रत्नावली को भूल राम में रम गए और युग पुरुष भी बन गए, लेकिन रत्नावली की फटकार को भूल नहीं पाए और ऐसी पंक्तियाँ लिखकर पूरी स्त्री जाति से खुन्नस निकाल ही ली। ओरे भाई! अगर पत्नी जी ने फटकारा न होता तो क्या तुलसीदास वह होते? जो वे हुए। अपनी पत्नी का एहसान मानने के बजाय....? और अपनी पत्नी के साथ-साथ सारी नारियों को लपेटे में लेने की क्या जरूरत थी? अब हमें भी खुन्नस निकालने का जी कर रहा है और गर खुन्नस निकालनी ही है तो जम के ही निकाली जाए। सबसे पहले तो पुरुष प्रधान समाज का ध्यान मनु स्मृति के श्लोक की ओर आकृष्ट करना चाहूंगी -

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रै तास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्त त्राफलाः क्रियाः॥

अर्थात् जिस कुल में स्त्रियों की पूजा होती है उस कुल पर देवता प्रसन्न होते हैं और जहां उसका आदर सत्कार नहीं होता वहाँ सब कर्म निष्फल हो जाते हैं।

वैदिक काल में तो स्त्रियों को बहुत सम्मान प्राप्त था। वे भी शास्त्रों का अध्ययन कर विदुषी बनती थीं। मध्ययुग में विदेशी आक्रमण और हमारे सांस्कृतिक पतन में नारी को गृहस्वामिनी से सीधे दासी बना दिया और हाशिए पर डाल दिया। अब आधुनिक काल में वह हाशिए से बाहर आ रही है, अतः हे पुरुष वर्चस्व सावधान! अगर नारी को उसका वांछित सम्मान न लौटाया तो वह दिन दूर नहीं जब हाशिए पर जा बैठोगे।

हर सफल पुरुष के पीछे स्त्री की प्रेरणा का योगदान होता है। इस तथ्य को पुरुषों ने भी स्वीकारा है। वह स्त्री माँ, बहन, पत्नी, प्रेमिका, बेटी या सखी - किसी भी रूप में हो सकती है।

नारी सृजन करने में सक्षम है। पुरुष उसी की कोख में पलकर बड़ा हुआ और आस्तीन का साँप बन बैठा। इस पुरुष वर्ग ने यहाँ तक कहा कि स्त्री का कोई धर्म नहीं होता और न ही कोई जाति। हिन्दू धर्म में वह शूद्रों व पशुओं के बराबर ही है। हर धर्म का प्रवर्तक कोई न कोई पुरुष है। सभी धर्मों में "पुरुष ईश्वर" की कल्पना की गई है। धर्मग्रंथों को भी पुरुषों ने ही लिखा है। अब ये सोचने वाली बात है कि नारी को शैतान का द्वार कहने वालों! जब ईश्वर ने अकेले आदम को बनाया तो आदम क्यों टेसुए बहाता रहा? न वह टेसुए बहाता न हव्वा आती। अपने अकेलेपन से ऊबकर आदम ने ईश्वर से सुन्दर साथी की मांग की, जो कोमल हो और उससे मीठी-मीठी बातें भी करे। ईश्वर ने उसे

तथास्तु कहा और हव्वा धरती पर अवतरित हो गई। आदम खुश हो गया, पर कुछ ही दिनों में उसकी बातें सुन-सुनकर उसके कान पक गए। वह फिर ईश्वर के पास गया और हव्वा को वापस लेने का आग्रह किया। ईश्वर ने तथास्तु कहा और हव्वा अंतर्ध्यान हो गई। आदम ने कुछ दिन शांति और सुकून से बिताए लेकिन फिर उसे ऊब हो गई। वह फिर ईश्वर के पास गया और बोला उसे फिर से हव्वा चाहिए पर ईश्वर उसकी बोलती बंद रखें। अब ईश्वर को आया गुस्सा। उन्होंने कहा अगर हव्वा चाहिए तो उसकी बातें सुननी पड़ेगी, वरना रहो अकेले। अकेले तो आदम रह नहीं सकता था और उसे हव्वा सहचरी के रूप में नहीं चाहिए थी, चाहिए तो एक चाबी वाले खिलौने के रूप में। जब वह चाबी घुमाए तो हव्वा हँसे बोले, जब वह न चाहे तो चुप हो जाए। भला यह भी कोई बात हुई। तुलसीदास से चले आ रहे नारी-निंदा में तुलसीदास अव्वल हैं तो कबीर भी कम नहीं। गृहस्थ संत होते हुए भी उन्होंने नारी को काली नागिन और नरक का कुंड कहा है। नारी के प्रति उदार तो नानक थे या फिर दरिया साहब। दरिया साहब ने जो लिखा वह तुलसीदास जी को पढ़ना चाहिए था। दरिया साहब ने लिखा है -

**नारी जननी जगत की, पाल पोष दे तोष।
मुख राम बिसारि कै, ताहि लगावै दोष।**

मेरे विचार में दरिया साहब वाकई दिलदार थे। सारी पुरुष बिरादरी को उनसे ट्रेनिंग लेनी चाहिए थी तो आज हमें खुन्नस निकालने की जरूरत न होती। वैसे एक सोचने वाली बात और भी है कि ये पुरुष अपने पुरुष होने पर जो दम भरता है इसमें ऐसा है क्या? इसे अपनी हर जरूरत पूरा करने के लिए 'नारी' का ही सहारा चाहिए। नारी रूपी शक्ति के बिना तो इसका कोई अस्तित्व ही नहीं। मसलन वह रहता है धरती की गोद में, पलता है धरती के अन्न से, प्यास बुझाता है नदी की धारा से, सरस्वती उसे विद्या देती है, लक्ष्मी उसे धन-धान्य से कृतार्थ करती है और अपने आपको शक्ति का स्तंभ समझने वाला यह पुरुष शक्ति के लिए भी शक्ति की आराधना करता है। स्वयं श्रीराम को रावण को पराजित करने के लिए शक्ति की आराधना करनी पड़ी थी और शक्ति ने उनकी परीक्षा लेकर उन्हें आशीर्वाद दिया था।

अंततः पुरुष वर्ग से निवेदन है कि अगर आप चाहते हो कि हम नारियाँ आगे और खुन्नस न निकालें तो अपने भीतर के रावण रूपी अहंकार को मारकर श्रीराम की तरह विजयी बनो, सच्चरित्र बनो, न्यायप्रिय बनो पर सावधान! इतना न्यायप्रिय भी मत बनें कि अपनी पत्नी का ही त्याग कर दें, नहीं तो.....न जाने क्या होगा इस धरती का। वैसे समझदार को इशारा काफी है।



**स्त्री की शक्ति से इनकार करने वाला आदमी स्वयं की
अवचेतना से इनकार करता है - अमृता प्रीतम**





जीवन में हॉबी के महत्व

श्री सूर्यकांत भारद्वाज
सहायक लेखा अधिकारी

हॉबी एक ऐसी चीज है जिसे व्यक्ति अपने खाली समय में करना पसंद करता है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी हॉबी को एक पसंदीदा गतिविधि के रूप में परिभाषित करती है जो एक व्यक्ति आनंद के लिए करता है न कि अपने नियमित व्यवसाय के रूप में। संक्षेप में, हॉबी किसी का पसंदीदा शगल है। इसलिए हमें अपने जीवन में हॉबी के महत्व को समझना चाहिए। हॉबी जन्मजात झुकाव नहीं है। इसे एक निरंतर और व्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से विकसित किया जाता है। लाभ कमाने के लिए कोई हॉबी नहीं अपनाई जाती है। हॉबी का मुख्य उद्देश्य उससे आनंद प्राप्त करना है। यह हमें मानसिक और शारीरिक आराम देता है। कोई हॉबी पूरा करके अपने खाली समय का सबसे अच्छा उपयोग करता है। अपने समय को तेज करने के कई तरीकों में से चुनाव करते समय, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह हमारी खोई हुई ऊर्जा को बहाल करे और हमें खुशी दे।

उन्नीसवीं सदी के एक लेखक आर. एल. स्टीवेन्सन ने अपने लेख 'एन एपोलोजी फॉर आइडलर्स' में अति-काम और अति-व्यवसाय की निंदा की है। उन्होंने अपने पाठकों को एक पार्क में जाने और आराम करने, चाय का आनंद लेने, राहगीरों से बात करने, एक संगीत वाद्ययंत्र बजाने, सर्दियों की धूप में स्नान करने, ध्यान करने के लिए समय निकालने की सिफारिश की है संक्षेप में, ऐसा कुछ करने के लिए जिसे 'काम' नहीं कहा जाता है।

तनाव से राहत के लिए हॉबी का महत्व:-

हॉबी को अक्सर उन लोगों के लिए गतिविधियों के रूप में माना जाता है जो शांति व आराम से जीवन जीते हैं। हालांकि, पूर्ण, व्यस्त, यहां तक कि तनावपूर्ण जीवन वाले लोगों को औसत व्यक्ति से अधिक हॉबी की आवश्यकता हो सकती है और अपने जीवन में हॉबी रखने से बहुत ही लाभ हो सकता है। हॉबी कई लाभ लाती है, जो आमतौर

पर उन्हें उस समय के लायक बनाते हैं, जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है। हॉबी रखने के कई फायदे हैं। जैसे हॉबी आपके शेड्यूल में काम-मुक्त और जिम्मेदारी-मुक्त समय प्रदान करती है।

हॉबी गहन कार्य दिवसों से आरामदेह मोड़ देती है। हॉबी दैनिक दिनचर्या की कार्य स्थितियों के कारण होने वाले तनाव से आराम और राहत देती है। यह दैनिक व्यक्तिगत और आधिकारिक कार्यों की परेशानियों और दबावों से मन को ठंडा करने का एक अच्छा समय है। दरअसल, हॉबी मन को दैनिक झंझटों की विचार प्रक्रियाओं से विराम देती है। उदाहरण के लिए, बागवानी न केवल मन को आनंद प्रदान करती है, यह एक शारीरिक व्यायाम भी है जो स्ट्रेस बफर का काम करता है। यह उन लोगों के लिए विशेष रूप से स्वागत योग्य हो सकता है जो अपने द्वारा किए जाने वाले सभी कार्यों से अभिभूत महसूस करते हैं और अपने आपको कुछ ऐसा करके ऊर्जावान बनाए रखने की आवश्यकता होती है जिसका उन्हें आनंद मिलता है। जो लोग जिम्मेदारी से अभिभूत महसूस करते हैं, उनके लिए समय निकालना मुश्किल हो सकता है या खुद को व्यस्त कार्यक्रम से छुट्टी लेने और बस बैठने और आराम करने की अनुमति देना मुश्किल हो सकता है। हालांकि, हॉबी में शामिल होना एक उद्देश्य के साथ एक विराम प्रदान कर सकता है, जो लोगों को यह महसूस करने में मदद कर सकता है कि वे केवल बैठे नहीं हैं बल्कि अपने खाली समय का उपयोग कुछ पाने लिए कर रहे हैं। किसी भी तरह, व्यस्त सप्ताह में हॉबी एक अच्छा ब्रेक प्रदान कर सकती है।

हॉबी की खोज अपने खाली समय बिताने का एक शानदार तरीका है। हॉबी को अपने स्वयं के

आंतरिक मूल्य के लिए रुचि की खोज की एक नियमित गतिविधि के रूप में वर्णित किया जा सकता है, न कि किसी पारिश्रमिक के लिए। फिर भी, कुछ हॉबी मध्यम मौद्रिक लाभ प्रदान कर सकती हैं। आमतौर पर यह भी देखा जाता है कि एक आदमी की हॉबी दूसरे आदमी का पेशा बन सकती है। अलग-अलग व्यक्तियों के व्यक्तित्व और मानसिक बनावट, रुचि, स्वभाव, शैक्षिक स्तर और जीवन शैली के आधार पर अलग-अलग लोग अलग-अलग तरह की हॉबी चुनते हैं।

कुछ सामान्य हॉबी हैं बागवानी, डांस करना, पेंटिंग, लेखन, तैराकी, गायन, नृत्य, गिटार बजाना, पियानो बजाना, साइक्लिंग, लम्बी पैदल यात्रा, दौड़ना, फुटबॉल खेलना, टेनिस खेलना, गोल्फ खेलना, व्यायाम करना, खाना बनाना, फोटोग्राफी, सर्फिंग, स्काईडाइविंग, रस्सी कूदना, स्केटिंग, स्केटबोर्डिंग, ब्लोगिंग, नई भाषा सीखना, शिल्प बनाना, बुनाई, सिलाई, ऑटोग्राफ एकत्र करना आदि। टेनिस, गेंदबाजी, गोल्फ, एथलेटिक्स आदि जैसे कुछ प्रतिस्पर्धी हॉबी भी हैं।

एक हॉबी का शैक्षिक मूल्य:-

हॉबी रखना बेहद शिक्षाप्रद है। शिक्षा वस्तुतः प्रशिक्षण का पर्याय है। विभिन्न हॉबी का पालन करना अपनी पसंद की विभिन्न गतिविधियों में एक प्रकार का प्रशिक्षण है और वे हॉबी किसी के दृष्टिकोण को व्यापक बना सकती हैं। हॉबी का पालन करके बहुत सारे अनुभव, कौशल और ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। जैसे फिल्मों देखने के शिक्षाप्रद मूल्य को कम करके नहीं आंका जा सकता है। किसी विशेष समाज के सांस्कृतिक मूल्यों, तौर-तरीकों और मानदंडों को फिल्मों के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रदान किया जा सकता है। फिल्में इतिहास, भौगोलिक जानकारी और अद्भुत वैज्ञानिक खोजों और आविष्कारों को प्रसारित करने का भी महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

इसी प्रकार खाली समय में रुचिपूर्ण और ज्ञानवर्धक किताबों को पढ़ना भी शिक्षाप्रद हॉबी है। यह हॉबी किसी के भी द्वारा विकसित किया जा सकता है। किताबों को पढ़ना एक व्यक्ति को खुश और व्यस्त रखता

है। यह आनंद, ज्ञान, प्रोत्साहन और सूचना का अच्छा स्रोत है। यह हमें अनुशासन, न्यायप्रिय, विश्वसनीय, समय का पाबंद और इससे भी अधिक महत्वपूर्ण एक सफल व्यक्ति बनाता है। किताबों को पढ़ने के माध्यम से कोई भी व्यक्ति अकेला और परेशान नहीं रह सकता। मेरा मानना है कि यह आदत संसार में स्वर्ण से भी ज्यादा कीमती है। यह हमें विभिन्न क्षेत्रों में काम करने के लिए उच्च स्तर का ज्ञान, आदर्श विचार, अच्छी सोच, आदि प्रदान करता है। जो किताबें पढ़ने के शौकीन होते हैं, उनके लिए अच्छी और रुचिपूर्ण किताबें अच्छे मित्र की तरह होती हैं। जिसके पास यह आदत नहीं है, चाहे उसके पास कितनी भी अधिक सांसारिक वस्तुएं और धन क्यों न हो, फिर भी वह ज्ञान की सच्ची दौलत के अभाव में गरीब होता है। किताब पढ़ने की आदत या हॉबी को किसी के भी द्वारा किसी भी अवस्था में प्राप्त किया जा सकता है।

हॉबी सहयोग की भावना प्रदान करता है। एक हॉबी से समान रुचियों के अन्य लोगों से मिलने और दोस्ती करने का मौका मिलता है। सूचना प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रसार और सामाजिक उद्देश्यों के लिए इसके उपयोग के बावजूद, मानव साहचर्य का कोई विकल्प नहीं है। अन्य समान विचारधारा वाले लोगों के साथ खाली समय बिताने जैसा कुछ नहीं है। सहयोग तनाव और चिंता से मुक्त होने और स्वस्थ सामाजिक संपर्क और गतिविधियों के अवसर प्रदान करके स्वास्थ्य लाभ देता है। समान रुचि समूहों के लोगों के साथ जुड़े रहना अलगाव और अकेलेपन को रोकने में सहायक होता है।

तनाव के स्तर को कम करने में मदद करने के तरीके के रूप में हॉबी को प्रोत्साहित किया जाता है। जब आपका मन पूरी तरह से आपके हॉबी में लगा होता है तो हमारे तेज-तर्रार समाज में जीवन की परीक्षाओं और क्लेशों को कुछ समय के लिए पीछे हटाना पड़ता है। जब तक आप अपने जीवन में वापस आते हैं, तब तक वे सभी समस्याएं और चुनौतियाँ इतनी भारी नहीं लगती हैं और आप पाते हैं कि आप

पाते हैं कि आप उन्हें अधिक प्रभावी ढंग से संभाल सकते हैं।

अगर आपके हॉबी में कुछ बनाना शामिल है तो किसी खास के लिए कुछ खास बनाने की संतुष्टि भी होती है। एक हाथ से बना उपहार प्राप्तकर्ता को बहुत अनिश्चित शब्दों में कहता है कि आप परवाह करते हैं। आपने समय निकालने और उनके और अकेले उनके लिए वास्तव में कुछ अनूठा बनाने का प्रयास करने के लिए पर्याप्त देखभाल की। वह किसी भी महंगे स्टोर से खरीदे गए से कहीं अधिक है।

किसी तरह का हॉबी खाली समय का सदुपयोग का सबसे बेहतरीन जरिया है। हॉबी व व्यवसाय में बहुत अंतर है। व्यक्ति के हॉबी में लाभ हानि की कोई भूमिका नहीं होती है। हॉबी का मकसद कभी लाभ प्राप्त करना नहीं होता है, यदि ऐसा है तो वह हॉबी न होकर व्यवसाय बन जाता है तथा यह हॉबी नहीं रहती है।

एक अच्छे हॉबी के बिना जीवन को तनाव मुक्त व खुश बनाना कठिन है। शरीर के तनाव व सुस्तता को दूर करने का हॉबी एक अच्छा माध्यम है। यह व्यक्ति के जीवन को सुखद बनाने के साथ-साथ खुश रखता है। दिन रात अपने काम की दिनचर्या से थकावट से फुर्सत का वक्त निकालने का काम हमारा हॉबी करता है। यह हमें बोरिंग लाइफ से निकालकर, एक शानदार जीवन की ओर ले जाता है।

हॉबी क्यों महत्वपूर्ण हैं

हम जिस हॉबी का आनंद लेते हैं वह हमें खुशी देती है और हमारे जीवन को समृद्ध बनाती है। यह हमें हमारे खाली समय में करने के लिए कुछ मजेदार देती है और हमें नए कौशल सीखने का अवसर प्रदान करती है। एक नई हॉबी विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका कुछ नया करने की कोशिश करना है। दुनिया अब्दुत, रोमांचक गतिविधियों से भरी हुई है जिसे हम अपने स्वयं के रूप में खोज और अपना सकते हैं। बेशक, हम सभी अद्वितीय हैं और इसलिए, हमारे हित और हॉबी अलग-अलग हैं। लेकिन एक बार जब हमें कोई ऐसी हॉबी मिल

जाती है जिसका हम वास्तव में आनंद लेते हैं और उसके प्रति जुनूनी होते हैं तो हम आदी हो जाते हैं। यह हमारे जीवन का हिस्सा बन जाता है। यह आपको और दिलचस्प बनाता है।

यह आपको किसी ऐसी चीज़ में व्यस्त रखकर तनाव को दूर करने में मदद करता है जिसका आप आनंद लेते हैं। हॉबी आपको रोजमर्रा की ज़िंदगी के तनावों से अपने दिमाग को निकालने का एक तरीका देती है। यह आपको आराम करने और उन गतिविधियों में आनंद लेने देता है जो काम या अन्य जिम्मेदारियों से जुड़ी नहीं हैं। हॉबी आपको अधिक धैर्यवान बनने में मदद करते हैं। एक नया हॉबी विकसित करने के लिए आपको कुछ ऐसा करना सीखना होगा जो आपके लिए बिल्कुल नया हो। संभावना है कि सीखने की अवस्था होगी और आपको अपने कौशल का निर्माण करने के लिए धैर्य रखने की आवश्यकता होगी।

यह आपके आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान को बढ़ाता है। संभावना यह है कि यदि आप वास्तव में किसी गतिविधि का आनंद लेते हैं तो आप आमतौर पर इसमें बहुत अच्छे होते हैं। कोई भी गतिविधि जिसमें आप उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं, आपके लिए अपना आत्मविश्वास बढ़ाने और अपनी उपलब्धियों पर गर्व करने का एक अवसर है। हॉबी बोरियत को कम करने या मिटाने में मदद करते हैं। जब आप अपने आप को अपना समय भरने के लिए कुछ नहीं पाते हैं तो वे आपको कुछ करने के लिए देते हैं। वे आपको एक ऐसी गतिविधि भी देते हैं जिसका आप इंतजार कर सकते हैं और उत्साहित हो सकते हैं।

यह आपको नए कौशल विकसित करने में मदद करता है। एक हॉबी जिसे आप वास्तव में अपना समय समर्पित करते हैं वह आपको नए कौशल बनाने के लिए प्रेरित करेगा। जैसे-जैसे आप अपने हॉबी में अधिक समय व्यतीत करेंगे, आप इसमें बेहतर और बेहतर होते जाएंगे। यह आपके ज्ञान को बढ़ाता है। नए कौशल के निर्माण के साथ-साथ आप अपनी हॉबी के

के विकास के माध्यम से नया ज्ञान भी प्राप्त करेंगे। यह आपके जीवन को समृद्ध बनाता है और आपको चीजों पर एक अलग दृष्टिकोण देता है। कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप किस प्रकार की हॉबी चुनते हैं, आप निश्चित रूप से नए विचारों के संपर्क में आएंगे। हॉबी आपको विभिन्न तरीकों से बढ़ने में मदद करती हैं, जिसमें आपको नई राय और जीवन को देखने के नए तरीकों से अवगत कराना शामिल है। यह आपको चुनौती देती है। जब आप कोई नई हॉबी चुनते हैं तो आप उन गतिविधियों में शामिल होंगे जो नई और चुनौतीपूर्ण हैं।

कुछ साल पहले, मैंने नियमित रूप से व्यायाम करने का फैसला किया और यह मेरे लिए एक अद्भुत हॉबी रही है, हालांकि, कुछ लोग तर्क दे सकते हैं कि यह एक हॉबी के बजाय एक और की आवश्यकता है। हालांकि, मैं वास्तव में सभी प्रकार के व्यायाम का

आनंद लेता हूँ: जिम जाना, वजन उठाना, दौड़ना, चलना, खेलना आदि। जितना अधिक मैं इसे करता हूँ, उतना ही मैं सीखता हूँ और इसका आनंद लेता हूँ। मैं बहुत से अद्भुत लोगों से भी मिला हूँ जो इस जुनून को साझा करते हैं।

हॉबी मेरे जीवन का एक बहुत ही महत्वपूर्ण हिस्सा है। मुझे लगता है कि यह मेरे दिनों को समृद्ध करती है और मुझे जीवन के नियमित तनावों से काफी हद तक मुक्ति दिलाती है। यदि आपने पहले से ऐसा नहीं किया है तो मैं अत्यधिक अनुशंसा करता हूँ कि आप कम से कम एक हॉबी का पता लगाना और विकसित करना शुरू करें जिसका आप वास्तव में आनंद लेते हैं। मैं गारंटी देता हूँ कि आपको बहुत खुशी होगी कि आपने किया।



ऑडिट सप्ताह – 2022 :: साइकिल रैली



स्त्री शक्ति

श्रीमती पुष्पा कौशल

पत्नी - श्री रुपेंद्र कुमार कौशल
कनिष्ठ अनुवादक

स्त्री शक्ति के प्रसंग में एक शेर को जोड़कर देखा जा सकता है कि-

‘तेरे माथे पे ये आँचल तो बहुत खूब है,
पर इस आँचल से तू परचम बना लेती तो अच्छा था’

स्त्री क्या एक सामाजिक पहचान है या लिंग आधारित व्यवस्था। वास्तविकता में ‘यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता’ जैसी आदर्शवादी पंक्ति सुनने में जितनी मधुर है उसके पीछे की वास्तविकता उतनी ही भयावह है। आदिकाल से ही पुरुष समाज ने उसे दुर्गा माँ, सरस्वती माँ बनाकर उसे संसाधन विहीन कर दिया है या फिर उसे सीधे जमीन पर लाकर खड़ा कर दिया। उसे सदैव सामाजिक अधिकारों से वंचित रखा गया।

स्त्री शक्ति की भावना की अभिव्यक्ति इस तथ्य से पृष्ठ होती है कि इस सृष्टि के निर्माण में नारी भावना ही प्रधान रही है। पृथ्वी, गाय, माँ आदि नारी के ही प्रतिरूप हैं। यह हमारे समाज की विसंगति ही है कि उसने कभी इसे एक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित ही नहीं होने दिया।

स्त्री शक्ति की सबसे प्रमुख बाधक पितृसत्तात्मक सोच तथा इस मानसिकता से उपजी वह व्यवस्था है जो स्त्री को दोगुना दर्जा प्रदान करती है। समाज की यह विसंगति रही है कि उसने स्त्री को मनुष्य माना ही नहीं, हमेशा एक वस्तु के रूप में उसकी अस्मिता का दोहन करता रहा। स्त्री शक्ति की प्रारंभिक लड़ाई ही उसे एक मनुष्य मानने की है।

सिमोन दी बोउआर कहती हैं “वन इज नोट बॉर्न, रादर बिकम ए वुमन” अर्थात् स्त्री पैदा नहीं होती बना दी जाती है। इसका आशय यह हुआ कि संस्थागत रूप से एक स्त्री का निर्माण समाज द्वारा कर दिया जाता है। बचपन से ही स्त्री के लिए गुड़िया, फूल आदि खिलौने दिलाए जाते हैं और लड़कों को बंदूक जैसे खिलौने। बचपन में हमेशा एक संस्कृत अनुवाद करने को मिलता है कि “गौरव खेलता है” और “कोमल खाना पकाती है”। आखिर क्यों गौरव ही खेलता है और क्यों कोमल ही खाना पकाती है। वास्तविकता में ऐसी बहुत सारी विडम्बनाएँ हैं जो स्त्री को संस्थागत रूप से पुरुषों के मुकाबले दोगुना दर्जा प्रदान करती हैं।

मैत्रेयी पुष्पा जी दलितों और स्त्रियों के मध्य अंतर स्पष्ट करती हुई कहती हैं कि “स्त्रियों और दलितों के शोषण में बस इतना ही अंतर है कि दलित तो अपने शोषण से परिचित होता है परंतु स्त्रियाँ अपने शोषण से अनभिज्ञ रहती हैं। वे अपने शोषण को अपना दायित्व समझकर उसका निर्वहन करती हैं।” अर्थात् दलितों से भी वीभत्स स्थिति स्त्रियों की है। स्त्री शक्ति की परिकल्पना तब तक साकार रूप नहीं ले सकती जब तक वे अपने शोषण से परिचित नहीं होगी।

स्त्री शक्ति की संकल्पना उनके आर्थिक सशक्तिकरण के बिना सम्भव नहीं है। पुरापाषाण काल से संसाधनों पर एकाधिकार पुरुष सत्ता का ही रहा है।

सबसे महत्वपूर्ण और आश्चर्यजनक यह है कि जिस पितृसत्ता ने उनका शोषण कर उनको दोयम दर्जा प्रदान किया है वे उस पितृसत्ता की ही परिपोषक हैं। एक बहन व माँ के रूप में वे उस पितृसत्ता को पोषित करती रहती हैं। यदि वे अपने स्वचेतना की भावना को पहचान लेती हैं तो वे निश्चित तौर पर सत्ता का विकेंद्रीकरण करने में सक्षम होंगी और इस विकेंद्रीकरण से जो ऊर्जा निकलेगी वह स्त्री को सशक्त एवं समृद्ध करने में सहायक होगी।

हिंदी साहित्य में ध्रुवस्वामिनी भी अपने समाज में प्रमुख तीन सत्ताओं से लड़ रही थी। वह पितृसत्ता, राजसत्ता व धर्मसत्ता से संघर्ष करती है। भारतीय समाज में भी दलित स्त्रियाँ इन्हीं त्रयी शक्तियों से लड़ रही हैं।

जयशंकर प्रसाद जी ने लिखा है:-

“पुरुषत्व के मोह में भूल गए कुछ सत्ता है नारी की
सहचर संबंध बने, अधिकार व अधिकारी की”।

तभी वास्तविकता में सार्थक सशक्तिकरण सम्भव हो पाएगा व इसके परिणाम धरातल पर मूर्त होते हुए दिखेंगे।

अंततः हमें बस इतना समझना होगा कि स्त्री शक्ति उसके स्वयं के अटूट संकल्प और इच्छाशक्ति पर निर्भर है। स्त्री सृष्टि का आधार है। “रथ का दूसरा पहिया” कविता में कवि ने लिखा है-

“एक ओर नारी को हम श्रद्धा के योग्य बनाते हैं
और भ्रूण कन्या को गर्भ में दफनाते हैं
यदि कन्या भ्रूण शिशुओं की यूँ ही घटती जाएगी,
फिर शादी जैसे बंधन की याद मात्र रह जाएगी,
फिर कैसे सपने आएंगे मधुर मिलन अहसासों के,
कैसे कोई गीत लिखेगा, प्यार भरे अहसासों के
दुनिया सारी सूनी होगी, सृष्टि चक्र रुक जाएगा
कृष्ण अकेले घूमेंगे, राधा से कौन मिलाएगा”।



ऑडिट सप्ताह – 2022 :: ऑडिट रन



इंतजार

श्री प्रवीण कुमार कम्ठान

सेवा निवृत्त सहा. लेखा अधिकारी

“उम्मीद पर दुनिया कायम है”

“सब्र का फल मीठा होता है”

यह कहावत हम सभी ने सुनी हैं। उम्मीद पर खरा उतरने या उसे पूरा करने के लिए अथक प्रयास की आवश्यकता होती है। प्रयास के बाद सिलसिला शुरू होता है, इंतजार का, अर्थात् सब्र रखने का। उदाहरणार्थ- विद्यार्थी साल भर पढ़ाई करता है, कड़ी मेहनत करके परीक्षा देता है और फिर परीक्षा - परिणाम का इंतजार करता है।

इंतजार, यह एक ऐसा शब्द है जो जन्म के पूर्व से ही व्यक्ति के साथ जुड़ जाता है। जिस दिन महिला गर्भवती होती है उस दिन से ही उसके सास-ससुर कुल के दीपक का बेसब्री से इंतजार करने लगते हैं। सास अपनी बहू का और उसके खान-पान का विशेष ध्यान रखने लगती है क्योंकि वह उसके परिवार की वंश बेल को आगे बढ़ाने वाला वंशज देने वाली है। नौ माह का समय नवीन आगंतुक के इंतजार में गुजरता है। गर्भवती महिला के दिल के किसी कोने में न चाहते हुए भी यह इच्छा जन्म ले लेती है कि गर्भ में पल रहा शिशु बेटा ही हो क्योंकि वह जानती है कि उसका पूरा परिवार कुल के दीपक का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। इस एक पुत्र मोह की कामना उससे नौ माह की स्वच्छंद अनुभूति का आनंद छीन लेती है। वह डरते-डरते इस अनमोल समय को गुजारती है। जब इंतजार की घड़ियाँ समाप्त होती हैं और वह माँ बनती है, तब पुत्र की माँ बनने पर परिवार उसे सर-आंखों पर बिठाता है, किंतु अगर पुत्री की माँ बनती है तो उसे पुनः माँ बनने और

बेटा ही देने की आज्ञा से उसी दिन से ही अनुबंधित कर दिया जाता है।

इंतजार केवल पुत्र-पुत्री के जन्म तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि बड़े होते बच्चों में इसका स्वरूप बदल जाता है। अब बच्चों के बचपन को सूली पर चढ़ाने की बारी आती है। उनकी आजादी माता-पिता की अपेक्षाओं द्वारा लील ली जाती है। माता-पिता की प्रतिस्पर्धा की भावना इतनी प्रबल होती है कि वे अपने बच्चों की क्षमताओं और रुचियों की भी परवाह नहीं करते हैं। परवाह रह जाती है तो बस इंतजार की कि पड़ोसी या रिश्तेदार के बच्चों से उनके बच्चों के नंबर अधिक आने चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र चाहे वह पढ़ाई का हो, खेल-कूद या अन्य किसी भी कौशल का, बच्चा उनका ही अव्वल आना चाहिए। पढ़ाई बच्चे करते हैं, परीक्षा बच्चे देते हैं, खेलकूद या अन्य प्रतियोगिताओं में भाग बच्चे लेते हैं, पर उनके परिणामों का फिर यूँ कहें कि नंबर 1 (वन) पर आने का इंतजार बच्चे से अधिक माता-पिता करते हैं।

पढ़ाई पूरी होने पर कैरियर की चिंता पुनः अच्छे परिणाम पाने की चाह, मनचाही नौकरी पाने की कामना एक बार फिर इंतजार करने पर मजबूर कर देती है। मनचाही नौकरी या कभी-कभी जो मिल गई उसी में संतोष करने के बाद मनचाहा जीवनसाथी पाने का इंतजार शुरू हो जाता है। अतएव कहा जा सकता है कि इंतजार शब्द हमारे जीवन में उलझी कड़ियों की तरह हर कदम पर हमें मिलता है, जिन्हें सुलझाते हुए

हमें अपने जीवन में आगे बढ़ते जाना होता है।

यह इंतजार प्रारंभ से ही हमारे दैनिक जीवन की हर क्रिया-कलाप से जुड़ा हुआ मिलता है। जैसे- स्कूल जाने वाले बच्चे, स्कूल की तैयारी में माँ की सहायता और माँ द्वारा दिए जाने वाले लंचबॉक्स का इंतजार फिर स्कूल बस का इंतजार करते हैं। पति अपनी दैनिक जरूरतों में पत्नी की सहायता और डाइनिंग टेबल पर खाने का इंतजार करता है। महिला अपनी सहायक (काम वाली बाई) का इंतजार, दूध वाले का, पेपर वाले का, सब्जी वाले का, छुट्टी के समय बच्चों के घर लौटने का इंतजार करती है। बूढ़े माता-पिता समय पर नाश्ता, खाना, दवाइयाँ, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों, बीमार होने पर बहू-बेटे से सेवा की इच्छा, खाली समय में नाती-पोतों के साथ खेल कर और उन्हें कहानियाँ सुनाने के लिए इंतजार करते हैं।



कहने का तात्पर्य यह कि इंतजार ही वह सीढ़ी है जो हमें अपनी मंजिल पर पहुंचने का माध्यम साबित होती है।

मानवीय जीवन जटिलताओं का गुथा हुआ गुलदस्ता है, जो अनेक सम्बंधों और कर्तव्यों से बंधा हुआ होता है। आवश्यकता और कर्तव्य व्यक्ति को एक-दूसरे से आपस में जोड़े रखते हैं। चूंकि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह अकेला जीवन-यापन नहीं कर सकता अतः वह समाज के व्यक्तियों से जुड़ कर ही अपना जीवन-यापन करता है। व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई माना जाता है। इसी कारण वह सबसे पहले परिवार से, फिर समाज से, तत्पश्चात राज्य और अंत में राष्ट्र की इकाई के रूप में एक से अनेक तक का सफर तय करता है।



ऑडिट सप्ताह – 2022



पत्रकारिता प्रभाव एवं प्रसार

श्री हरिवंश सिंह कुशवाह
डी.ई.ओ.

मानव जीवन में पत्रकारिता अपने महत्वपूर्ण स्थान और उच्च आदर्शों के पालन में पहचान बनाती चली आ रही है। भारत में पत्रकारिता तो 100 वर्षों से चली आ रही है।

पत्रकारिता का अर्थ एवं महत्व: समाचारों का संकलन, जानकारी जुटाना एवं समाचार संस्थाओं तक पहुंचाना, संपादित करना और सम्यक प्रस्तुतीकरण आदि पत्रकारिता में सम्मिलित हैं।

भारत में पहला हिंदी समाचार पत्र उदंत मार्तंड सन 1826 ईस्वी में प्रकाशित हुआ था उस समय संपादक ही पत्रकार हुआ करते थे।

आज देश में 22 भाषाओं में 82000 से भी अधिक शीर्षक के साथ पत्र पत्रिकाएं छपती हैं जिनके पाठकों की संख्या भी लगभग 40 करोड़ है।

पत्रकारिता का मुख्य कार्य: सूचना प्रदान करना, शिक्षा प्रदान करना, लोगों का मनोरंजन करना, नई-नई चीजों के बारे में एवं घटनाओं के बारे में ताजा जानकारी देना आदि।

पत्रकारिता का प्रकार: पत्रकारिता कई तरह की होती है:-

(क) खोजी पत्रकारिता (ख) वॉच डॉग पत्रकारिता (ग) एडवोकेसी पत्रकारिता (घ) पेज श्री फैशन पत्रकारिता (ङ) खेल पत्रकारिता (च) महिला पत्रकारिता (छ) वॉल पत्रकारिता (ज) आर्थिक पत्रकारिता (झ) ग्रामीण एवं कृषि पत्रकारिता (ञ) विज्ञान पत्रकारिता (ट) विकास पत्रकारिता (ठ) संसदीय टेलीविजन पत्रकारिता (ड) विधि पत्रकारिता (ढ) फोटो पत्रकारिता (ण) रेडियो पत्रकारिता (त) शैक्षिक पत्रकारिता (थ) अपराध पत्रकारिता (द) राजनीतिक पत्रकारिता (ध) कार्टून कोना पत्रकारिता एवं अन्य।

विभिन्न माध्यमों से की जाने वाली पत्रकारिता जैसे अखबार, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन एवं वेब-पत्रकारिता। छोटे माध्यमों में प्रमुख समाचार पत्रों का महत्व अग्रणी है चाहे वह हिंदी भाषा में या अंग्रेजी या राज्यों के अलग-अलग स्थानीय भाषाओं में हो, देश के विकास में अभूतपूर्व सहयोग दे रहे हैं।

प्रमुख समाचार पत्र: देश के सामाजिक, वैश्विक राजनीतिक एवं अन्य विषय पर प्रमुख समाचार पत्र हैं जैसे:-

1. **दैनिक जागरण:** दैनिक जागरण हिंदी में प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र है जो सन् 1942 से प्रकाशित हो रहा है। उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर से संपादित हो रहा है। वर्तमान समय में यह 11 राज्यों में प्रकाशित हो रहा है।
2. **दैनिक भास्कर:** मध्य प्रदेश के प्रमुख समाचार पत्रों में एक जो सन् 1958 से भोपाल से प्रकाशित हो रहा है। वह भारत के 14 राज्य एवं बड़े शहरों में प्रभाव बनाए हुए हैं।
3. **अमर उजाला:** सन् 1948 से प्रारंभ आगरा से प्रकाशित होने वाला हिंदी अखबार देश के सात राज्य में प्रमुख योगदान दे रहा है।
4. **टाइम्स ऑफ इंडिया:** अंग्रेजी भाषा का प्रथम समाचार पत्र है जोकि सन् 1830 से ही प्रकाशित हो रहा है।
5. **हिंदुस्तान:** दिल्ली से प्रकाशित होने वाला यह अखबार सन् 1888 से ही प्रचलन में है तथा केरल सहित कई राज्यों का प्रमुख अखबार है।

6. **इनाडु:** तेलुगु भाषा में प्रकाशित होने वाला यह अखबार सन् 1974 से ही आंध्र प्रदेश एवं वर्तमान में तेलंगाना में पढ़ा जाने वाला प्रमुख अखबार है।

7. **मातृभूमि:** मलयालम भाषा का प्रथम अखबार है जो कि सन् 1923 से प्रकाशित हो रहा है। केरल एवं दिल्ली से भी प्रकाशित हो रहा है। मलयालम भाषा का दूसरा अखबार “मलयालम मनोरमा” है।

पत्रकारिता के फायदे: पत्रकार व्यक्ति को अखबार के माध्यम से या ई-पत्रिका के माध्यम से व्यक्ति विशेष को जनता के बीच लाकर खड़ा करता है। देश को गुलामी से मुक्ति दिलाने में पत्रकारिता ने देश के लोगों को एकता के सूत्र में बांधा, जागरूक किया, जनता में स्वतंत्रता के प्रति चेतना जगाई और आजादी के उद्देश्य तक पहुंचाया। पत्रकारिता के माध्यम से आज सभी तरह की जानकारी लोगों तक पहुंचाई जा रही है। पत्रकारिता से हमें ज्ञात होता है कि देश में क्या हो रहा है तथा वैश्विक जगत की नई खोजों एवं घटनाओं के बारे में भी जानकारी मिलती रहती है। देश की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक गतिविधियों का ज्ञान, मौसम विज्ञान के क्षेत्र में मौसम का पूर्वानुमान एवं भविष्य में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं एवं उससे रक्षा के उपायों की जानकारियां प्राप्त होती रहती हैं। अखबारों, ई-पत्रकारिता, मैगजीन आदि से हमें अन्य जगहों के बारे में पता लगता है तथा भ्रमण एवं परिवहन में सहायता मिलती है। पत्रकारिता के माध्यम से लोगों में सामाजिक जुड़ाव, सद्भाव एवं इतिहास तथा देश के प्रमुख धरोहरों का ज्ञान प्राप्त होता है। एक अच्छी पत्रकारिता लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करती है। समाचार पत्रों में संपादकीय, आध्यात्मिक पहलुओं पर तथा अच्छे विचारों पर लेख टिप्पणी पाठकों के विचारों में परिवर्तन लाती है तथा राष्ट्र के विकास में अपना प्रमुख योगदान दे रही है।

पत्रकारिता एवं समाचार पत्रों की चुनौतियां: वर्तमान में विश्व के कई देशों जैसे अमेरिका, यूरोप में समाचार पत्रों का प्रसार एवं प्रभाव घट रहा है। समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं की लोकप्रियता भी घट रही है। लेकिन भारत,

चीन एवं ब्राजील सहित विश्व के कुछ अन्य देशों में पत्रकारिता का प्रसार व प्रभाव बढ़ रहा है।

समाचार पत्रों का भविष्य अभी सुरक्षित है क्योंकि छपे हुए समाचार पत्र के बिना एक अच्छे पत्रकारिता की कल्पना करना कठिन है। समाचार पत्र न हो तो फिर पत्रकारिता खतरे में पड़ जाएगी, आप लिखित वस्तु कहां से लाएंगे जो लोगों को प्रभावित कर सकती है।

पत्रकारिता को बढ़ावा देने के लिए नई पीढ़ी को नई तकनीकी का प्रयोग कर आकर्षित करना होगा। जिस तरह साक्षरता एवं आमदनी बढ़ रही है उसी तरह समाचार पत्र एवं पत्रकारिता का प्रसार भी बढ़ना चाहिए और इस को बढ़ाने में पत्रकार व संपादक को नई तकनीकी से परिपूर्ण होना पड़ेगा।

पत्रकारिता वर्तमान समय में एक प्रमुख व्यवसाय बन गया है। तकनीकी विकास, परिवहन, उद्योगों का प्रसार इसके मुख्य कारण हैं। इसमें समय के अनुसार बदलाव आया है। इंटरनेट के बढ़ते प्रभाव ने समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के प्रभाव की गति को धीमा किया है। अतः भारतीय भाषाओं में हिंदी में अंग्रेजी के अलावा मातृभाषा में भी पत्र-पत्रिकाओं का प्रसार बढ़ाना होगा। आज रेडियो पत्रकारिता तथा इंटरनेट की तकनीक ने पूरी दुनिया की दूरी मिटा दी है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स, इंटरफॉर्म वेबलॉग, ब्रॉडकास्ट, फोटोग्राफ, चलचित्र ने ई-पत्रकारिता को बढ़ाया है।

निष्कर्ष: आज के परिवेश में समाज व राष्ट्र के विकास के लिए पत्रकारिता का निष्पक्ष होने के साथ-साथ पत्रकारिता की मूल मर्यादाओं का पालन और संरक्षण अति आवश्यक है।





मैं भारत हूँ

श्री गौरव कुमार पांडेय
सहायक लेखा अधिकारी

मैं भारत हूँ, कभी अजेय, अथाह अद्भुत सामर्थ्य था मेरा।
आज अपने गौरवपूर्ण अतीत का विस्मरण कर, खुद को रक्तरंजित हुआ पाता हूँ।
मैं भारत हूँ।

मैं कालातीत होकर भी खुद को काल के गाल में खड़ा पाता हूँ।
आज अपने अगणित टुकड़ों को समेटने में खुद को अशक्त पाता हूँ।

हिमालय के उत्तुंग नभस्पर्शी शिखरों सा मस्तक मेरा।
गंगा, दिहंग, सिंधु की जलमयी माला से सुशोभित होकर भी।
आज अपने पुत्रों के रक्त में, विवश हुआ प्रतिक्षण नहाता हूँ।
मैं भारत हूँ, कभी अजेय, अथाह अद्भुत सामर्थ्य था मेरा।
आज अपने गौरवपूर्ण अतीत का विस्मरण कर, खुद को रक्तरंजित हुआ पाता हूँ।
मैं भारत हूँ।

हिंद महासागर की अगणित तरंगों से सुशोभित, सूर्य की
गरिमामयी रश्मियों की अनेकता पर प्रश्न उठाता हूँ।
अपने वनों, जीवनदायी वनस्पतियों से पुत्रों का संरक्षण कर,
मैं सर्वदा सुख पाता हूँ।

जिसने अपने पुत्रों को संपूर्णता, सौहार्द, स्नेह एवं परोपकार सिखाया।
आज धर्म, वर्ण, जाति, रंग एवं विचारों में उन्हें बंटा पाता हूँ।
मैं निर्गुण हो, उस जिह्वा को तलाशता हूँ।
जो मेरे शब्दों को स्थान दे, पर खुद को उस खोज में असमर्थ पाता हूँ।
कदाचित्, एक झंडे तक ही आज सीमित रह गया हूँ मैं।
बस मीनारों, भवनों और परिसरों की शोभा बढ़ाता हूँ।
मैं भारत हूँ, कभी अजेय, अथाह अद्भुत सामर्थ्य था मेरा।
आज अपने गौरवपूर्ण अतीत का विस्मरण कर, खुद को रक्तरंजित हुआ पाता हूँ।
मैं भारत हूँ।

अपने करोड़ों संतानों में भरत, राम और कृष्ण को ढूँढता हूँ।
पर मानव मूल्यों की पुनः स्थापना करे, ऐसा कोई विधाता मैं ढूँढ नहीं पाता हूँ।

धोती हो या टोपी, मंत्रोच्चार हो या अजान, जब भी इनमें द्वंद होता है
चोट सदा मैं ही खाता हूँ

कुत्सित विचारों का विष पीकर नीलकंठ बना मैं,
इस व्यास विष को संपूर्ण नष्ट करने में, खुद को निराश पाता हूँ
मेरी पुत्रियां जब भी जलाई व प्रताड़ित की जाती हैं,
अपमान की असंख्य चिताओं को शरीर में जलता हुआ पाता हूँ
मैं भारत हूँ, कभी अजेय, अथाह अब्दुत सामर्थ्य था मेरा।
आज अपने गौरवपूर्ण अतीत का विस्मरण कर, खुद को रक्तरंजित हुआ पाता हूँ
मैं भारत हूँ।

भूख और गरीबी की मार झेलकर कोई पुत्र जब
मुझसे लिपटकर सोता है।
उसके अश्रुओं की ताप से तिल-तिल कर जलता जाता हूँ
इतने विध्वंस देखकर तेजहीन, शक्तिहीन बना मैं
नवनिर्माण की आकांक्षा त्याग नहीं पाता हूँ
अपने नेत्रों में सर्वत्र सुख की कामना लिए।
जननायकों के अवतरण की बाट देखता जाता हूँ।
मैं भारत हूँ, कभी अजेय, अथाह अब्दुत सामर्थ्य था मेरा।
आज अपने गौरवपूर्ण अतीत का विस्मरण कर, खुद को रक्तरंजित हुआ पाता हूँ
मैं भारत हूँ।

"हम भारतीयों के बहुत एहसानमंद हैं, जिन्होंने हमें गिनना
सिखाया, जिसके बिना कोई वैज्ञानिक खोज की ही नहीं जा
सकती थी।"

- अल्बर्ट आइंस्टीन



बेटियाँ

श्रीमती रंजना ठाकुर

पत्नी - श्री उदित कुमार ठाकुर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

कितने ही अरमानों से, ब्याही जाती हैं बेटियाँ!!
 पलकों से उतार ...पालकी में बिठाई जाती हैं बेटियाँ!!
 बड़ी ही शिद्दत से, संभाली जाती हैं बेटियाँ!!
 नखरे उठाकर लाड़ से, पाली जाती हैं बेटियाँ!!
 शिक्षा - संस्कार से भरी जाती हैं बेटियाँ!!
 सद्गुणों की मिसाल बनाई जाती हैं बेटियाँ!!
 योग्यता की भंडार बनाई जाती हैं बेटियाँ!!
 तब किसी के हाथ सौंपी जाती हैं बेटियाँ!!
 किसी अंजान की तकदीर बन जाती हैं बेटियाँ!!
 नए लोगों को अपनाने में लग जाती हैं बेटियाँ!!
 कितना बड़ा दांव, कितनी अजीब विडंबना है!!

अब आगे किस्मत के सहारे हो जाती हैं बेटियाँ!!

सही इंसान मिले तो मुकद्दर की बात है!!

वरना बेरहम वक्त की कठपुतली हैं बेटियाँ!!

माँ- बाप की लाडली, जिम्मेदार बहू बन जाती है..

अल्हड़ से समझदार बन जाती हैं बेटियाँ!!

पल भर में इनकी दुनिया ही बदल जाती है
 हंसकर नए माहौल में ढल जाती हैं बेटियाँ!!
 हमसफ़र का प्यार मायने बहुत रखता है..
 सब कुछ पीछे छोड़, आगे बढ़ जाती हैं बेटियाँ!!
 ईश्वर करे इनको खुशियों का जहाँ मिले
 परिस्थितियों में कभी मजबूर ना हो बेटियाँ!!
 सहनशीलता को धारण करने वाली बेटियाँ
 विवशता की शिकार कभी भी ना हो बेटियाँ!!
 इसलिए आत्मनिर्भर बनायी जाती हैं बेटियाँ!!
 आत्मसम्मान के आभूषण से सजायी जाती हैं बेटियाँ!!
 हर क्षेत्र में अपना परचम लहराती हैं बेटियाँ!!

घर-बाहर के सारे दायित्व निभाती हैं बेटियाँ!!

जागरूकता का अलख जगाती हैं बेटियाँ!!

परिवर्तन की नई मशाल जलाती हैं बेटियाँ!!

मैं हूँ इक बेटी,मेरी भी हैं बेटियाँ!!

माँ-बाप के सम्मान की सूचक हैं बेटियाँ!!

“यदि पुरुष देश की शान है तो महिला उस देश की नींव है”

- सरोजिनी नायडू



सफ़र

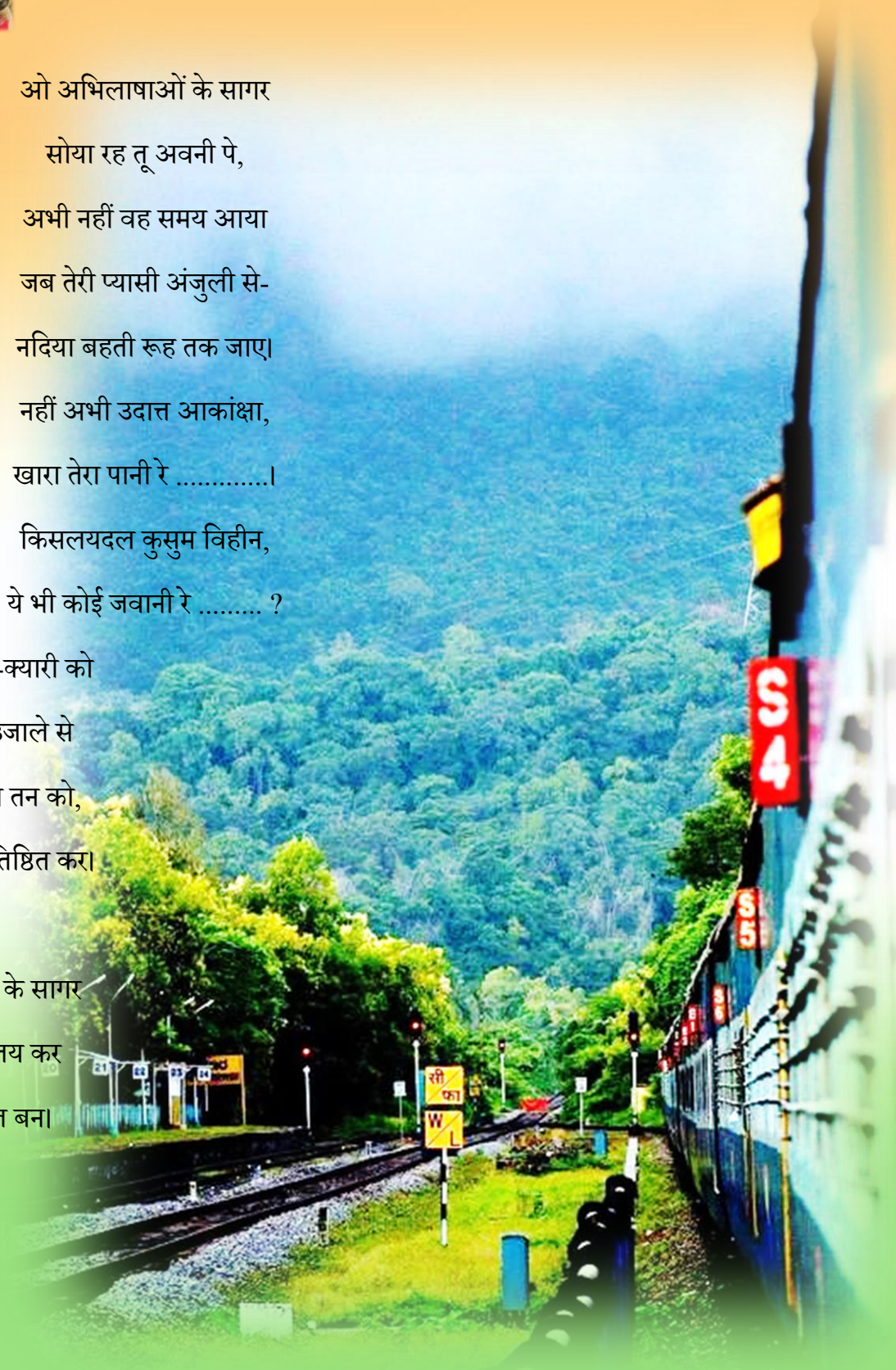
सुश्री ब्युटी अंकिता
अतिथि रचनाकार

ओ अभिलाषाओं के सागर
सोया रह तू अवनी पे,
अभी नहीं वह समय आया
जब तेरी प्यासी अंजुली से-
नदिया बहती रूह तक जाए।
नहीं अभी उदात्त आकांक्षा,
खारा तेरा पानी रे।
किसलयदल कुसुम विहीन,
ये भी कोई जवानी रे ?

कर निस्पंदन लवण-क्यारी को
चेतना के करुण उजाले से
कर निस्पंदन अपने तन को,
छन-छन संचयन प्रतिष्ठित कर।

जल बना।

ओ अभिलाषाओं के सागर
ये एक सफ़र तू तय कर
-तू पानी से जल बना।





इंसान कितना भोला है

श्री रुपेंद्र कुमार कौशल
कनिष्ठ अनुवादक

बर्फ में लिपटा सोचता है आग का गोला है,
इंसान कितना भोला है,
वक्त से लड़ता अपनों से डरता,
सतरंगी उसका चोला है,
इंसान कितना भोला है !

डोर टूटी पकड़ कर उड़ने की सोचता है,
साँसों से हारकर जीतने की सोचता है,
जिस पटल पर रहता,
वो तो महज मिट्टी का गोला है,
इंसान कितना भोला है !

नम आँखों से दूसरे का दर्द वो पोंछता है,
जहाँ न मिले उसे कोई जगह,
अक्सर वो चीज वहीं खोजता है,
पानी से भी ना बुझे जो,
उसका मन ऐसा शोला है,
इंसान कितना भोला है !

बिन कहे वो दूसरे का दर्द टटोलता है,
बिन पूछे अपने राज भी वो खोलता है,
बहकाने में ना जाना,
उसने अब तक झूठ भी कई बोला है,
इंसान कितना भोला है!



“हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत
में राजभाषा भी होगी”
- सी. राजगोपालाचारी



रोटी

श्री भूपेंद्र 'भोजराज' भार्गव
अतिथि रचनाकार

उदर अगन की शांतिदूत तुम,
हर चूल्हे की धड़कन हो।
प्राण व्यवस्था की संचालक,
तुम दिन-भर की अनबन हो।

प्रतिदिन तेरे लिए लड़ाई,
पगला जगत जहान है।
तू अनमोल है तेरी कीमत,
न समझे नादान है।

राम-रहीम हो तुम गरीब की,
तू फकीर की पगली है।
बदला है बस रूप तुम्हारा,
नहीं जरूरत बदली है।

शहर जो आया गांव छोड़कर,
किस्मत उसकी रूखी है।
दोष धरे किसके सिर जाकर,
जिसकी दुनिया भूखी है।

कड़ी मशक्कत तेरी खातिर,
झगड़ा तू संसार का।
पिंजड़ा तन का तुम बिन मानव,
नखरा तू व्यापार का।

राजनीति की तुम संसाधन,
सत्ताओं की हलचल हो।
तुम प्रकाश भूखी आँखों का,
तुम धारा-सी अविरल हो।

आसानी से मिले किसी को,
और किसी से दूरी है।
बिलख रहे जिस घर में बच्चे,
तू उसकी मजबूरी है।

तेरी चाहत सुबह जगाए,
शाम ढले तेरे साथ में।
खुशनसीब तुझको पा जाए,
रहना तू हर हाथ में।

क्यूँ नफरत तुझको गरीब से,
जिसकी तू भगवान है।
तेरी खातिर दर-दर भटके,
कैसा तू वरदान है।

तुमसे रिश्ता है सांसो का,
रक्त तुम्हीं हो धमनी का।
नहीं नसीबों में तुम जिसके,
कैसा खेले है करनी का।

तुम व्यंजन में हो महारानी,
पालक सकल जहान की।
तुम आदर हो तुम्हें नमन है,
पोषक जन कल्याण की।





किस बात पे हँसना है, किस बात पे रोना है

श्री हरिओम कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

"इस बात से ही बोझिल मन का मेरा कोना है,
किस बात पे हँसना है, किस बात पे रोना है,

इंसान बड़ा खुद को कितना भी कहे लेकिन,
वो वक्त के आंगन में छोटा-सा खिलौना है,

रोना तो मगर ये है, इक उम्र गुजरनी है,
तब जा के कहीं उसको एहसास ये होना है,

लम्हें ये जवानी के अनमोल तो बेशक हैं,
चाहें कि न चाहें पर सबको इसे खोना है,

इक भोर खुशी वाली, इक शाम सुहानी-सी,
हर आंख में बस ये ही इक सपना सलोना है,

पर किसको खबर बोलो, पल कितने जगेगा वो,
है किसको पता बोलो, किस पल उसे सोना है,

आंसू की कहानी को पढ़ना बड़ा मुश्किल है,
खुशियों में भी आंखों को गम में भी भिगोना है॥



“प्रांतीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार
से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज़ से नहीं मिल सकती”

- नेताजी सुभाष चंद्र बोस



मेरी रसोई

श्रीमती पुष्पा कौशल

पत्नी - श्री रुपेंद्र कुमार कौशल

कनिष्ठ अनुवादक

हाँ ये मेरी रसोई है,
 हाँ ये मेरी सृष्टि है
 मैं ही रचनाकार हूँ इसकी
 हाँ वो चीनी पत्ती
 के डब्बों से लेकर
 वो दाल राजमा के
 डब्बों तक
 सजा के रखे हैं मैंने
 इस्तेमाल के अनुसार
 हाँ ! शायद
 तुम्हें आदत नहीं
 इस व्यवस्था की
 हाँ, तुम आओगे
 तो जान ही जाओगे
 कि कौन सा डब्बा
 किधर रखा है,
 हाँ ये सब इतना

मुश्किल भी नहीं
 पर क्या तुमने, कभी
 कोशिश भी की है
 यह सब जानने की समझने की?
 क्या तुम जानते हो कि
 दालों को आगे पीछे
 किस आधार पर रखा है मैंने
 या क्या तुम जानना भी
 चाहते हो कि
 रसोई सिर्फ मेरे
 अकेले की नहीं
 अपितु हम सबकी है
 चलो छोड़ो भी,
 हाँ ये मेरी रसोई है
 हाँ ये मेरी सृष्टि है,
 मैं ही हूँ रचनाकार इसकी



“जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव
 नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता है” - डॉ. राजेंद्र प्रसाद



कविताएं

श्रीमती रंजना ठाकुर

पत्नी - श्री उदित कुमार ठाकुर

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आपदा

गगन विस्मित सा खड़ा है धरा के प्रलय से!!
समझ नहीं पा रहा है चाल ये समय के!!
स्तब्ध है वो!!!!!!किंकर्तव्यविमूढ़ सा!!
क्या हाल है आज...सुंदर सी इस धरा का!!

दग्ध है धरती चिता के अंगारों से!!
नदियाँ कराह रहीं हैं अस्थि के प्रवाहों से!!
विनाश का ये खेल खत्म होता नहीं दिखता!!
इस प्रचंड ज्वाला का अंत कहीं नहीं दिखता!!
रोना चाहता हैं अंबर पूर्ण हाहाकार से!!
पर नेत्र सूख चुके हैं विचित्रता के प्रहार से!!
कैसा अनर्थ!!!!कैसी ये विडम्बना है!!
मंद पड़ चुकी अब संतों की भी चेतना है!!
ऐसा प्रतीत होता है ईश्वर ने साथ छोड़ दिया !!
रूष्ट होकर शायद प्रकृति ने भी मुख मोड़ लिया!!
अब मानव का संबल कौन बन पायेगा!!
किसकी सत्कृपा से ये प्राणवायु ले पायेगा!!
विशाल सा हृदय लिए आकाश मौन बैठा है!!
बरसने को है आतुर..... पर आपदा से टूटा है!!

सुनहरी शाम

सुख सुनहरी शाम ने
तारों की चूनर तान ली
चांद की बिंदियां सजाकर
बन गई दुल्हन नई !!
शोख हवा के झोंके ने
उसके आंचल को लहराया
कानों में आकर हौले से
दिल की बातें कह गया !!
शरमाई-सकुचाई-सी वो
अपने रास्ते चल पड़ी
मद्धिम-सी मुस्कान थी
अधरों पर शरारत भरी !!
पत्तों की सरसराहट थी
जुगनुओं का झुंड था !!
नदियों की धाराओं में
कल-कल का एक शोर था !!
उसको ना कोई फिक्र थी
वो लहराई-बलखाई-सी
प्रीतम से मिल आने को
पल-पल कुछ व्याकुल-सी !!
बस कुछ लम्हों का फर्क था
अब भोर ना उनसे दूर था
आलिंगन में भर लेने को
आतुर आत्म-विभोर था !!

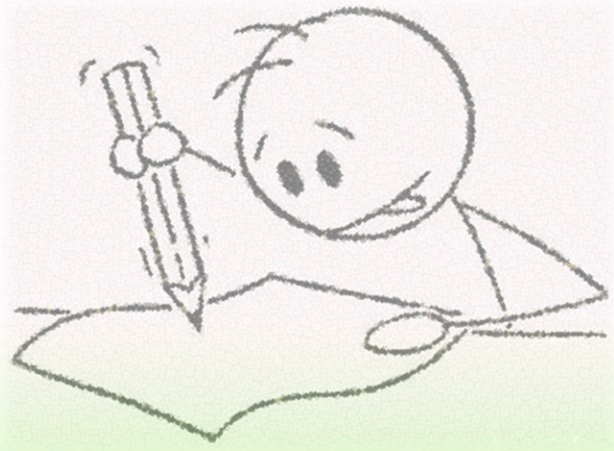




क्या लिखूं?

श्री रुपेंद्र कुमार कौशल
कनिष्ठ अनुवादक

कार्यालय की मैगजीन छपने वाली है,
मिला मुझे ये समाचार।
सोचा तो क्या लिख डालूँ,
आर्टिकल दो चार !!
कहानी लिखूँ या कविता लिखूँ,
या फिर लिखूँ कोई लेख ?
इसके लिए मैं बैठ गया,
टेबल पर सिर टेका।
पापा से पूछा, मम्मी से पूछा,
भैया से पूछा, भाभी से पूछा।
पत्नी से पूछा, बच्चों से पूछा।
फौज पर लिखूँ या भ्रष्टाचार पर,
साथ-साथ नोटबंदी पर भी था विचार।
सोचा बहुत पर बैठे-बैठे,
सुबह से शाम हो गई।
और, इन्हीं विचारों में खोकर,
यह कविता तैयार हो गई।



“सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि
आवश्यक है तो देवनागरी ही हो सकती है”

- जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर



मानव और गुलाब

श्री हरिवंश सिंह कुशवाह
डी.ई.ओ.

संदर्भ: यह कविता माली (पिता) अपने ही बगीचे के फूल गुलाब से प्रभावित होता है क्योंकि गुलाब, माली के बिना अधूरा लगता एवं माली भी। गुलाब की मुस्कान एवं कांटों से मिलना माली को सुख पहुंचाता है। वही आजकल बेटे अपने बूढ़े माँ-बाप को अकेला छोड़ देते हैं तथा सेवा शुश्रूषा भी नहीं करते हैं। इसी भाव पर यह कविता है:

कांटों के मध्य खिलते गुलाब,
को जब कभी मैं देखता हूँ
कष्टों से भरे आहट में
चेहरे पर मुस्कान उकेरता हूँ।
मैं भूल जाता हूँ कि
मैं मानव हूँ और गुलाब प्रकृति।
एक ही मिट्टी में दोनों पले हैं,
पर गुलाब मानव से क्यों भले हैं।
कांटों के मध्य खिलते गुलाब
को जब कभी मैं देखता हूँ...
माली और फूल के रिश्ते भी,
कितने अजीब होते हैं।

एक मुस्कराहट के साथ सुखी है...
तो दूसरा अपने ही बगीचे में दुःखी है।
वो किलकारी जो माली ने लगाए हैं,
बड़े होकर माली को भुलाएं हैं।
स्थिर गुलाब ये देख मुस्करा रहा था
माली को दोनों पुत्रों का अंतर समझा रहा था।
कांटों के मध्य खिलते गुलाब को...
जब कभी मैं देखता हूँ...
मानव की भावनाएं, सुमन को...
चाहकर भी आहत नहीं कर पायी।
सुमन की सुगंध व मुस्कराहट ने
मानव को प्रकृति का ज्ञान कराया।।





मर्यादा की खूँटी

श्री मदन गोपाल शर्मा

वरिष्ठ लेखा पाल
सेवा निवृत्त

वे अड़ रहे हैं, लड़ रहे हैं और पीछे हट रहे हैं,
सोचते कुछ है कुछ हो रहा है अनवरत घट रहे हैं,
कह रहे जो कुछ समझकर जानते खुद ही नहीं हैं,
शब्दभेदी बाण खुद के खुद ही में लग रहे हैं,
बेवजह क्यों कह रहे हो समय का ही खेल देखो,
सोचो साथ के ये लोग साथ से क्यों भाग रहे हैं,
क्यों नहीं पक रही खिचड़ी जरा तुम सोचकर देखो,
जो दाँत काटी रोटी थे कल तक आज क्यों बँट रहे हैं,
यह ठीक है कभी सबसे महान रह चुके होंगे,
आज तो कुछ भी नहीं हो केवल यही तो सब रट रहे हैं।

सियासत में मर्यादाएँ पूरी तरह टूटी हैं,
शालीनता शराफत पूरी तरह टूटी हैं,
यह ठीक है समय आज बहुत कुछ बदला है,
पर क्या कहें हमारी किस्मत ही फूटी हैं,
लाख समस्याओं पर कोई समझता ही नहीं,
चैन किसी को भी नहीं बात सभी झूठी है,
पता नहीं खाली कौन सी जड़ी-बूटी है,
हजारों साल की परम्पराएँ अचानक बदल गई,
अब तो जो यह कह दें वही मर्यादा की खूँटी है।





नारी की व्यथा

श्री विवेक सिंघल

लेखापाल

कोई पत्थर की मूर्त नहीं जो पूजी जाऊं,
लेकिन सूखी लकड़ी भी नहीं जो हमेशा जलाई जाऊं।
माना मेरी फितरत में त्याग और प्रेम है,
पर जरूरी नहीं हमेशा अपमानित ही की जाऊं।
माना हर रिश्ता निभाना मेरी जिम्मेदारी है,
पर ये भी तो नहीं मैं किसी से निभाई न जाऊं।
माना पग-पग पर इम्तिहान है मेरा,
पर जरूरी तो नहीं हर बार अग्नि परीक्षा में झुलसाई जाऊं।
माना मेरा तन और मन बहुत कोमल है,
पर ये तो नहीं हमेशा इस कमजोरी का शिकार बन जाऊं।

वैसे तो लोग मुझे देवी दुर्गा का रूप मानते हैं,
पर वही लोग क्यों मुझे अपनी हवस का शिकार बनाते हैं ?
यूं तो लोग कहते हैं नारी सम्मान की अधिकारिणी है,
पर वही लोग मुझे क्यों भोग की पात्रिणी मानते हैं ?
वैसे तो लोग मुझे हर दर्द में पुकारते हैं,
पर वे ही लोग क्यों मुझे हर पल चोट पहुंचाते हैं ?

कहते हैं नारी, नारी की दुश्मन होती है,
पर एक मर्द होकर भी क्यों नारी के दुश्मन हो?
तुम तो वही मर्द हो जो नारी की गोद में पलकर बड़े हुए हो,
फिर क्यों बड़े होकर नारी को ही ठुकराते हो?



“राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है”
- महात्मा गांधी



छोटा सा ख्वाब

श्रीमती रंजना ठाकुर

पत्नी - श्री उदित कुमार ठाकुर
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

मत गिनो हमारे जख्मों को
हम पूरा हिसाब रखते हैं,
एक - दो पन्ने नहीं,
पूरी किताब रखते हैं!

महफ़िल से उठकर चल दिए
अब मुड़कर देखना कैसा,
दिल और कहीं लगायेंगे
ऐसा दिल जनाब रखते हैं!

होती हैं कुछ शिकायतें
पर जाहिर नहीं करते कभी,
हाँ, आपकी हर गिला का
मुकम्मल जवाब रखते हैं!

बेसबब-सी जिंदगी
होती है किसी और की,
हम तो अपनी जिंदगी
बस, लाजवाब रखते हैं!

खुशियाँ किसी के साथ
हर घड़ी नहीं होती,
अपने हर हाल को
हम बेमिसाल रखते हैं!

गुलशन में खिले हर गुल से
अपनी यारी कमाल की है,
कांटे भी हैं खुशबू से भरे
ऐसा गुलाब रखते हैं!

आजमाया है हमने बहुत
दर्द को, बदगुमानी को,
पर हमसे जीत मुश्किल है
ऐसा मिज़ाज रखते हैं!

ना शोहरत ना दौलत
ना ही जन्नत का शौक है,
हर दिल अजीज बन पाऊँ
ये छोटा-सा ख्वाब रखते हैं!!





जीना हुआ मुहाल

श्री ए. एच. खान

वरिष्ठ लेखा पाल

“अब जीना हुआ मुहाल जरा देखो तो
जमाना है परेशां जरा देखो तो”

“नई दुनिया तो खूब बसाई तुमने
अब हमारा है क्या हाल जरा देखो तो”

“अमीर हो रहे मालामाल जरा देखो तो
हर काम में है गोलमाल जरा देखो तो”

“झूठ-फरेब का है बोलबाला जरा देखो तो
गरीब की पहुँच के बाहर हर काम जरा देखो तो”

“ऊपर है मायाजाल जरा देखो तो
महँगा हुआ हर माल जरा देखो तो”

“आम आदमी का है बुरा हाल जरा देखो तो
मजदूर हो रहे निडाल जरा देखो तो”

“सब हो रहे खस्ताहाल जरा देखो तो
हर शख्स है बेहाल जरा देखो तो”

“क्या है किस्मत का हाल जरा देखो तो
खूब बन रहा ख्याली पुलाव जरा देखो तो”

“गरीब की खिंच रही खाल जरा देखो तो
अन्याय है बेशुमार जरा देखो तो”

“निवाला हुआ दुश्वार जरा देखो तो
हफीज कोई नहीं पुरसाने हाल जरा देखो तो”



याद रखना, अंधेरी रात में आपको दिया जलाने से कोई नहीं रोक सकता
- हरिवंश राय बच्चन



सितंबर 2021 से सितंबर 2022 तक खेलकूद एवं सांस्कृतिक गतिविधियाँ

खेल-कूद

श्री सोहन सिंह

कल्याण सहायक

भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय एवं अंतर्क्षेत्रीय वर्ष 2021-22 तक खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

1. भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग पश्चिम क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता जो दिनांक 04.04.2022 से 06.04.2022 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, म.प्र. ग्वालियर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने खेलने की पात्रता हासिल की।
2. भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता जो कि दिनांक 08.04.2022 से 10.04.2022 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, म.प्र. ग्वालियर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने खेलने की पात्रता हासिल की।
3. भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता जो कि दिनांक 06.04.2022 से 07.04.2022 तक कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) राजस्थान, जयपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने उपविजेता होने का गौरव प्राप्त कर अंतर्क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता में खेलने की पात्रता हासिल की।
4. भारतीय लेखा परीक्षा एवं लेखा विभाग की पश्चिम क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता जो कि दिनांक 04.05.2022 से 06.05.2022 तक कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-द्वितीय महाराष्ट्र, नागपुर द्वारा आयोजित की गई थी जिसमें कार्यालय की संयुक्त टीम ने खेलने की पात्रता हासिल की।

राष्ट्रीय स्तर वर्ष 2021-22 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)- प्रथम, म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री तरूण प्रकाश ने दिनांक 01.10.2021 से 07.10.2021 तक समस्तीपुर बिहार में आयोजित “बिहार सीनियर स्टेट बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2020-21 प्रतियोगिता” में भाग लिया।
2. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)- द्वितीय, म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री रोहन पाराशर ने दिनांक 16.12.2021 से 22.12.2021 तक चैन्नई में आयोजित, “थोनेक्स सनराइज ऑल इंडिया सीनियर रैंकिंग बैडमिंटन टूर्नामेंट-2021” में हरियाणा टीम की ओर से भाग लिया।
3. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)- प्रथम, म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत कु. निकिता ने मोहाली, पंजाब में दिनांक 01.04.2022 से 03.04.2022 तक आयोजित “नोर्थ जोन बैडमिंटन टूर्नामेंट-2022” में हरियाणा टीम की ओर से भाग लिया।

अखिल भारतीय सिविल सेवा वर्ष 2021-22 खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन

1. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय, म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री टी. एस. दहीवसे, श्री वितेश कपूर एवं सुश्री वंदना सिंह का मध्य प्रदेश टेबल टेनिस टीम में चयन किया गया एवं श्री सुयश चतुर्वेदी को मैनेजर के रूप में नामित किया गया। जिन्होंने त्यागराज स्टेडियम दिल्ली में दिनांक 24.09.2021 से 29.09.2021 तक आयोजित प्रतियोगिता में भाग लिया।
2. पंचकुला में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा बैडमिंटन स्पर्धा जो दिनांक 24.03.2022 से 30.03.2022 तक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)- प्रथम एवं द्वितीय, म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री गौरव प्रताप एवं श्री रोहन पाराशर ने म.प्र. टीम की ओर से भाग लिया एवं उपविजेता रहे।
3. दिल्ली में दिनांक 10.03.2022 से 17.03.2022 तक आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा शतरंज स्पर्धा में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय म.प्र. ग्वालियर में कार्यरत श्री अशरफ कुरैशी एवं श्री सुनील कुमार राठौड़ ने म.प्र. टीम की ओर से भाग लिया।
4. दिल्ली में दिनांक 10.03.2022 से 15.03.2022 तक आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा कैरम स्पर्धा में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय मध्य प्रदेश (भोपाल) शाखा में कार्यरत श्री के. रामचन्द्रन एवं श्री महेश पाण्डेय ने म.प्र. टीम की ओर से भाग लिया।

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम एवं द्वितीय म.प्र. ग्वालियर की ओर से सांस्कृतिक एवं खेलकूद प्रतियोगिताओं का आयोजन।

1. मुख्यालय की ओर से वर्ष 2021 खेलकूद भर्ती की जिम्मेदारी कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)- प्रथम म.प्र. ग्वालियर को दी गई थी जिसके तहत कार्यालय में 03 क्रिकेट पुरुष खिलाड़ी एवं 02 बैडमिंटन महिला खिलाड़ी नियुक्ति किए गए। नियुक्त किए गये खिलाड़ियों द्वारा वर्तमान में अपने-अपने राज्यों से राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लिया जा रहा है जिनमें से नवनिर्भर क्रिकेट खिलाड़ी श्री कुलदीप सेन “आई.पी.एल. प्रतियोगिता” में राजस्थान रॉयल की टीम की ओर से खेल रहे हैं।
2. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)- प्रथम म.प्र. ग्वालियर को मुख्यालय की ओर से भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग वर्ष 2021-22 पश्चिम क्षेत्रीय फुटबॉल एवं कैरम प्रतियोगिता के आयोजन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी जिसे सफलतापूर्वक सम्पन्न करा लिया गया है।



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस -2022

महिलाओं और पुरुषों में लैंगिक समानता बनाए रखने तथा महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 08 मार्च को अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है जिसका आयोजन हमारे कार्यालय में भी उत्साहपूर्वक किया जाता है।

इस वर्ष भी 08 मार्च 2022 को कार्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रधान महालेखाकार सुश्री गीताली तारे द्वारा की गई। उनकी अनुप्रेरणा और मार्गदर्शन में कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध 'स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ' डॉ. रोजा ओलयाई थी जिनकी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा और अधिक बढ़ गई। कार्यक्रम का सफल एवं प्रभावी संचालन सुश्री प्रीति सिंह द्वारा किया गया।

सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदया ने मुख्य अतिथि डॉ. रोजा ओलयाई को शॉल भेंटकर कार्यक्रम में उनका स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ अध्यक्ष महोदया और मुख्य अतिथि महोदया द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर, किया गया। तत्पश्चात्, सुश्री काजल वर्मा एवं सुश्री प्रीति सिंह द्वारा माँ दुर्गा को समर्पित युगल नृत्य की मनोरम प्रस्तुति दी गई। तदुपरांत, सुश्री सरस्वती आर्य, सुश्री स्नेहलता एवं सुश्री सरोज मोदी द्वारा स्वागत गीत की मधुर प्रस्तुति दी गई। इसी क्रम में, नारी जीवन की विविध अवस्थाओं के संघर्षों को दर्शाते हुए नृत्य की भावभीनी प्रस्तुति सुश्री काजल वर्मा द्वारा दी गई। इसके बाद, सुश्री सरस्वती आर्य एवं सुश्री स्नेहलता ने स्वर सम्राज्ञी लता मंगेशकर के गाए गीतों में से कुछ गीतों की मधुर एवं संगीतमयी प्रस्तुति के माध्यम से स्वर कोकिला को श्रद्धांजलि दी।

सभी प्रस्तुतियों के बाद कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. रोजा ओलयाई ने अपने संबोधन में कहा कि महिलाओं को सबसे पहले स्वयं से प्यार करना सीखना होगा और यह समझना होगा कि वे स्वस्थ रहेंगी तभी परिवार स्वस्थ रह सकता है। उन्होंने बहुत ही सहजता एवं सरलता से "ब्रेस्ट कैंसर" पर आधारभूत जानकारी दी। साथ ही उन्होंने अति प्रसन्नता व्यक्त की कि वे इस कार्यक्रम का हिस्सा बनीं। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रधान महालेखाकार महोदया ने कहा कि सभी महिलाएं स्वयं को विशेष समझें तथा ईश्वर के प्रति आभार व्यक्त करें क्योंकि उन्होंने महिलाओं में अद्भुत क्षमता दी है।

तत्पश्चात्, प्रधान महालेखाकार महोदया ने कार्यालय परिसर में दैनिक वेतन पर काम करने वाली कामगार महिलाओं को उपहार देकर महिला दिवस के संबंध में उनको जानकारी दी। इसके उपरांत प्रधान महालेखाकार महोदया ने मुख्य अतिथि को औषधीय पौधा एवं स्मृति-चिह्न भेंटकर उनको सम्मानित किया।

अंततः सुश्री शशि झा ने मुख्य अतिथि एवं कार्यक्रम की अध्यक्ष का आभार व्यक्त किया। उन सभी महिला अधिकारियों/अधिकारियों के प्रति भी आभार जताया जिन्होंने कार्यक्रम में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिलाओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। साथ ही मनोरंजन क्लब के समस्त सदस्यों का भी आभार व्यक्त किया जिनके सहयोग से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।



अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस -2022 की झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 19.09.2022 से दिनांक 26.09.2022
तक आयोजित प्रतियोगिताएं एवं उनके विजेता

प्रतियोगिता का नाम	प्रतियोगिता तिथि	विजेता
स्वरचित काव्य पाठ	19.09.2022	प्रथम - श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा, लेखापाल
		द्वितीय - श्री मेराज अहमद, वरिष्ठ लेखापाल
		तृतीय - श्री हरिवंश कुशवाह, डी.ई.ओ., ग्रेड-ए
नारा लेखन	21.09.2022	प्रथम - श्री मोहम्मद इकबाल, लेखापाल
		द्वितीय - सुश्री काजल वर्मा, लेखापाल
		तृतीय - श्री विद्याप्रकाश, वरिष्ठ लेखापाल
राष्ट्र भक्ति गीत	22.09.2022	प्रथम - श्री बाल किशन, एम.टी.एस.
		द्वितीय - श्री अरब कौशिक, लेखा लिपिक
		तृतीय - श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा, लेखापाल
प्रश्नोत्तरी	23.09.2022	प्रथम - श्री देवेंद्र कुमार मिश्रा, लेखापाल
		द्वितीय - श्री विवेक सिंघल, लेखापाल
		तृतीय - 1. श्री राजकुमार रोहित, स.ले.अ. 2. श्री राकेश कुमार, स.ले.अ.
अंत्याक्षरी	26.09.2022	विजेता दल - सुश्री दिव्या बंधारिया, लेखापाल सुश्री ज्योति कुमारी, वरिष्ठ लेखापाल सुश्री कंचन, वरिष्ठ लेखापाल सुश्री उषा वर्मा, एम.टी.एस.

हिंदी पखवाड़ा-2022, नारा लेखन प्रतियोगिता के विजेता



श्री मोहम्मद इकबाल, लेखापाल, प्रथम पुरस्कार

सरल, सीधी एवं सुंदर है जिसकी परिभाषा,
वो है हमारे भारत की हिंदी भाषा।

आओ देश दुनिया तक हिंदी पहुंचाए,
संपूर्ण विश्व में अपनी एक अलग पहचान बनाएं,
अभी हिंदी है नंबर तीन पर, इसे करो पार चीन पर,
अर्थव्यवस्था है नंबर पांच,
आओ पहनाएं हिंदुस्तान को अब्बल नंबर का ताजा।



सुश्री काजल वर्मा, लेखापाल, द्वितीय पुरस्कार



श्री विद्या प्रकाश, वरिष्ठ लेखापाल, तृतीय पुरस्कार

अगर भारतीयों के दिलों पर करना है राज,
तो हिंदी बोलना शुरू कीजिए आज।

हिंदी पखवाड़ा-2022 की झलकियाँ





स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर बच्चों के साथ प्रधान महालेखाकार (मध्य) एवं उप महालेखाकार (बाएं एवं दाएं)



ऑडिट सप्ताह-2022 के दौरान चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

ऑडिट सप्ताह-2022 के दौरान रंगोली प्रतियोगिता में बनाई गई रंगोलियाँ





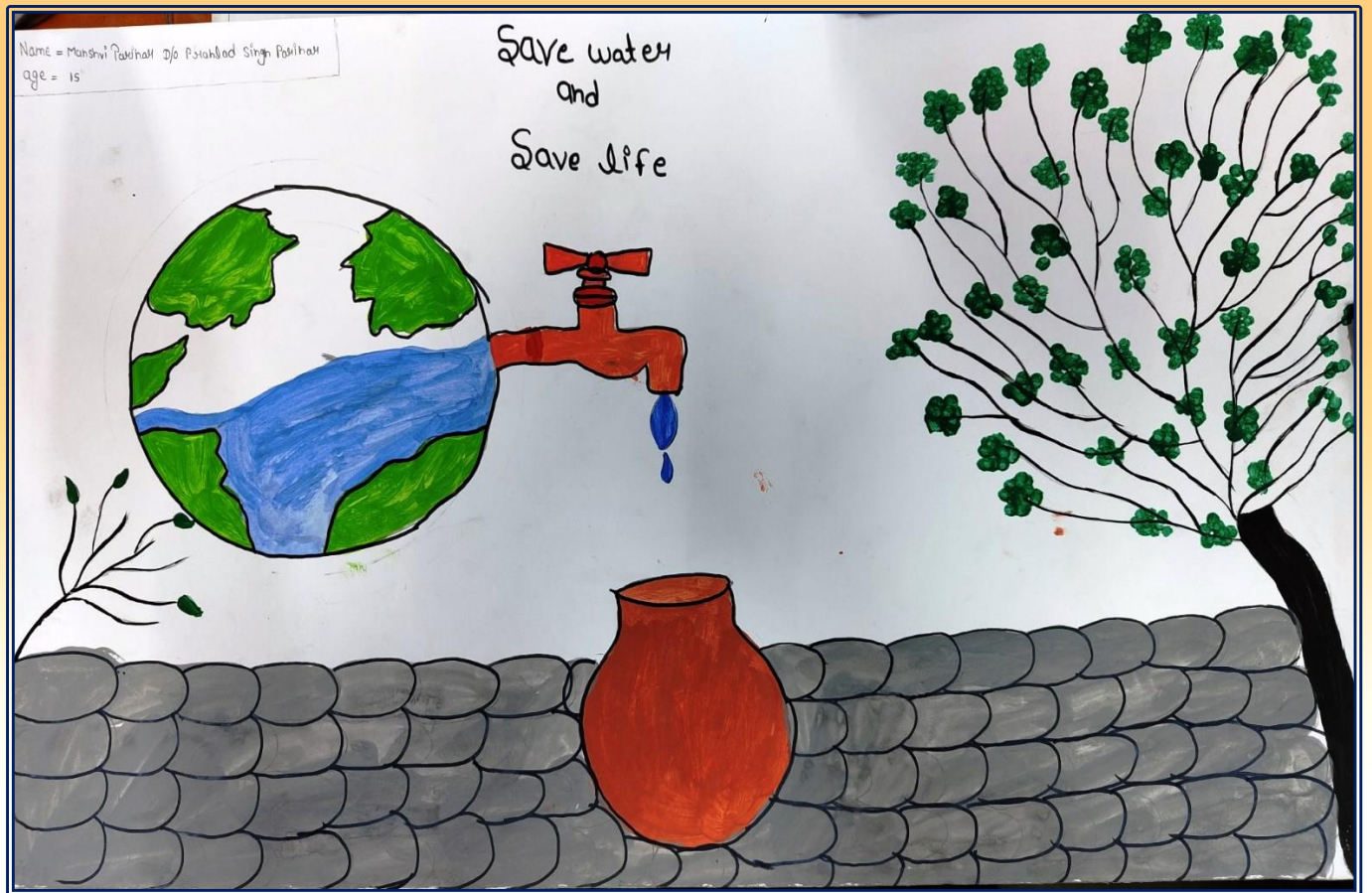
ऑडिट सप्ताह-2022 के दौरान आयोजित रंगोली प्रतियोगिता के प्रतिभागी



ऑडिट सप्ताह-2022 के दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रतिभागी



प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के उपविजेता (कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.)-द्वितीय, म. प्र. ग्वालियर)





राजभाषा नीति में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा प्रदत्त शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र



भारत सरकार
Government of India
गृह मंत्रालय
Ministry of Home Affairs
राजभाषा विभाग
Department of Official Language
प्रशस्ति पत्र
Commendation Certificate
‘क’ क्षेत्र/.....Region
श्रेणी कार्यालय /Category/Office.....

यह प्रशस्ति पत्र सुश्री अर्चना संदीप अराध्ये, सहायक लेखा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) द्वितीय, ग्वालियर को वर्ष 2020-21 के दौरान उनके संगठन द्वारा संघ की राजभाषा नीति के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए द्वितीय स्थान प्राप्त करने में उनके सराहनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया।

This Commendation Certificate is awarded to Ms. Archana Sandeep Aradhya, Assistant Accounts Officer, Office of the Principal Accountant General (Account and Entitlement-II), Gwalior for his/her admirable contribution to his/her organisation for being adjudged **Second** for commendable performance in implementing the Official Language Policy of the Union during the year 2020-21.

सचिव, भारत सरकार
Secretary to the Government of India

कार्यालय की पत्रिका ‘वीरांगना’ के 71वें अंक एवं राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु नराकास, ग्वालियर द्वारा प्रदत्त प्रशस्ति पत्र



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

*** प्रशस्ति पत्र ***

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2020-21 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर को द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर
दिनांक:- 15.12.2021

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर,
एवं प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर

*** प्रशस्ति पत्र ***

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर द्वारा नगर में स्थित समस्त केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों द्वारा वर्ष 2020-21 में विभागीय हिंदी पत्रिका का वर्ष में एक पत्रिका प्रकाशित करने वाले कार्यालयों में ‘वीरांगना’ के श्रेष्ठ प्रकाशन हेतु कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वितीय, मध्य प्रदेश, ग्वालियर को तृतीय स्थान प्राप्त करने पर सम्मानित किया जाता है।

ग्वालियर
दिनांक:- 15.12.2021

अध्यक्ष

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ग्वालियर,
एवं प्रधान महालेखाकार
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-प्रथम)
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

आज़ादी का अमृत महोत्सव के दौरान वृक्षारोपण कार्यक्रम



वरिष्ठ उप-महालेखाकार/निधि द्वारा वृक्षारोपण



उप-महालेखाकार/प्रशासन द्वारा वृक्षारोपण